पंचम अध्याय

"आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ"

पंचम अध्याय

"आलोच्य उपन्यासों में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन की समस्याएँ"

प्रस्तावना -

उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य जीवन की व्याख्या करना या जीवन दर्शन को अभिव्यक्त करना है। उपन्यास तथा उपन्यासकार तत्कालीन परिवेश की देन होता है। उपन्यासकार अपनी कृति में समाज के यथार्थ रूप का अंकन करता है। वह जीवन की व्याख्या तो करता ही है और जीवन की समस्याओं का चित्रण भी करता है। मानव जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। वर्तमान जीवन तो ऐसी अनेकानेक समस्याओं से जकड़ा हुआ है, जिनको सुलझाना बड़ा कठिन कर्म है। औद्‌योगिकरण, नागरीकरण, शहरीकरण, भूमंडलीकरण ने मानव को अनेक भौतिक सुविधाएँ तो प्रदान की लेकिन इसके परिणामस्वरूप जो समस्याएँ निर्माण हो रही हैं वह व्यक्ति ही नहीं तो पूरे मानव समाज को बाधक सिद्‌ध हो रही है। वैसे समस्या तो हर युग में मानव के साथ जुड़ हुई है। समस्या के कारण मानव के सामने कड़ी चुनौती उपस्थित होती है। इस चुनौती को स्वीकार करके समस्या को हल करना, हमारे जीवन का उद्‌देश्य बना है। समस्या का संबंध विकास से जुड़ा है। अतः समस्या के बिना विकास नहीं है। श्रेष्ठ साहित्यकार समकालीन समस्याओं को चित्रित कर समाधान प्रस्तुत करता है। राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा और मन्नू भंडारी आदि जैसे हिंदी के शीर्षस्थ साहित्यकारों में से हैं। इन्होने अपने साहित्य को वर्तमान जीवन की समस्याओं से जोड़ा है। अपने उपन्यासों में महानगरीय जीवन और भौतिक सभ्यता से विकसित समस्याओं का चित्रण किया है। राजेंद्र यादव के 'शह और मात', मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे', निर्मल वर्मा के 'वे दिन' तथा मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' आदि इसके प्रमाण हैं।

5.1 परिवार एवं टूटते दांपत्य जीवन की समस्या -

परिवार मानव जीवन की आधारशीला है। हर व्यक्ति की अपनी आकांक्षाएँ, इच्छाएँ परिवार के सहयोग से पूर्ण होती हैं। परिवार के महत्त्व के संदर्भ में डॉ. उषा मंत्री का विचार

है- ''परिवार इसीलिए भी महत्त्वपूर्ण है कि एक जहाँ उसमें थकी हुई पीढ़ी आश्रय पाती है वही भावी पीढ़ी का निर्माण भी है। परिवार में ही भूत, वर्तमान और भविष्य का साकार रूप निश्चित होता है।''[1] परिवार का मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान होकर भी आधुनिक जीवन में परिवार टूट रहे हैं। अनास्था के कारण आधुनिक काल में परिवार एवं दांपत्य जीवन में अधिकाधिक टकराव निर्माण हो रहा है। अविश्वास, विरोध की भावना और अहं के कारण परिवार खंडित हो रहे हैं, टूट रहे हैं। दांपत्य जीवन पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। स्त्री और पुरुष का विवाह परिवार की नींव है। पारस्पारिक प्रेम एवं सामंजस्य से ही दांपत्य जीवन सुखी होता है। आधुनिक युग में दांपत्य संबंध टूट रहे हैं। इसका मूल कारण पति-पत्नी में प्रेम, विश्वास, सामंजस्य, समर्पण की भावना का अभाव है। आधुनिक मध्यवर्ग में अधिकतर दांपत्य दुःखी जीवन बिताते हुए नजर आते हैं। समर्पण की भावना का अभाव होने से दांपत्य जीवन में अविश्वास, अहं और भय ही अधिक होता है।

राजेंद्र यादव के 'शह और मात' उपन्यास में पारिवारिक एवं दांपत्य विघटन की समस्या उच्च-मध्यवर्गीय परिवार में दिखाई देती है। पुरुष के झूठे अहं एवं खोखलेपन के कारण दांपत्य जीवन का विघटन दिखाई देता है। अपर्णा उसके पति युवराज के अत्याचार एवं मार-पीट के कारण अलग रहती है। उसका पति नपुंसक है, सिर्फ नाम का पुरुष है। अपर्णा सुजाता को बताती है- ''एक झूठे 'अहं' को संतुष्ट करने के लिए उनके लिए पूरा एक रानिवास रखा जाता है। एक से एक भयंकर शिकारी कुत्ते और रानिवास।''[2] स्पष्ट है युवराज अपनी कमजोरी छुपाने के लिए अपर्णा पर दानवीय अत्याचार करता है। उसे हीन समझता है, उस पर शक करता है, उसे अपमानित करता है। युवराज का यह कथन उस पर होनेवाले अत्याचार को स्पष्ट करता है। वह कहता है- ''अपने यार के तो पैरों पर गिर-गिरकर रोती है और पति के फीते खोलने में इज्जत जाती है ? हाथी के पाँवों तले रौंदवा दूँगा। भाइयों के भरोसे मत रहना। इस महल में किसी का घमंड नहीं चलता।''[3] उस दिन अपर्णा अधमरी हो गई थी। इस दुर्व्यवहार से अपर्णा उसे छोड़कर अपने भाइयों के पास चली आती है। दोनों का दांपत्य जीवन टूटने तथा दुःखपूर्ण होने का कारण पति का अहं और प्रेम तथा विश्वास का अभाव ही है।

'अंधेरे बंद कमरे' में मोहन राकेश जी ने दिल्ली के मध्यवर्गीय परिवार की कहानी को प्रस्तुत किया है। उपन्यास में प्रमुख रूप से हरबंस और नीलिमा के टूटते दांपत्य जीवन, उनके अहं, अजनबीपन, अलगावबोध की भावना को रूपायित किया है। नीलिमा और हरबंस के दांपत्य जीवन में प्रेम, समन्वय, समर्पण की भावना तथा सामंजस्य का अभाव है। इन्हीं वजह से उनका जीवन दुःख एवं असंतोष से भर जाता है। हरबंस और नीलिमा पति-पत्नी के रूप में नहीं तो स्त्री-पुरुष के रूप में दृष्टिगत होते हैं। इन दोनों के माध्यम से आधुनिक भारतीय मध्यवर्ग के स्त्री-पुरुष संबंधों का चित्रण किया है। आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करनेवाली नीलिमा भावुकता में नहीं बहती है। नीलिमा और हरबंस दोनों की रुचियाँ और सपने भिन्न-भिन्न हैं। नीलिमा नृत्य करना चाहती है तो हरबंस उसे चित्रकला की ओर मोड़ देता है। हरबंस अपने अहं, शकी स्वभाव एवं गलतफहमियों के कारण नीलिमा को हीन समझकर उसे दुःख देता है। इसी कारण उनके जीवन में त्रासदी, रीक्तता, घुटन दिखाई देती है। हरबंस का शक उनके जीवन को बरबाद करता है। नीलिमा कहती है- ''मैं अपनी जिंदगी अलग रहकर काट सकती हूँ, मगर अपने ऊपर झूठा लांछन बरदाश्त नहीं कर सकती...।''[4] स्पष्ट है इसी अविश्वास के कारण दोनों भी दुःखी रहते हैं।

नीलिमा आधुनिक नारी है। वह शिक्षित, स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली, बोल्ड स्वभाव की होने के कारण पति द्वारा लगाए गए लांछनों एवं बंधनों को तोड़ देती है। हरबंस रोजमर्रा की अनबन से छुटकारा पाने के लिए अकेला रहना चाहता है। इसी वजह से डॉक्टरी पढ़ने का बहाना बनाकर लंदन चला जाता है, लेकिन वहाँ अकेला नहीं रहता। वह कहता है- ''तुम्हारे साथ और तुम्हारे बिना, दोनों ही तरह जिंदगी मुझे असंभव प्रतीत होती है।''[5] दोनों में इतनी अनबन होने पर भी एक साथ जिंदगी बिताने के लिए अभिशप्त हैं। यह सच है कि मध्यवर्गीय परिवार में पति-पत्नी एक-दूसरे का संबल होते हैं, फिर उनमें कितना भी संघर्ष हो। नीलिमा अपने दांपत्य संबंध के बारे में कहती है- ''हम लोग पति-पत्नी हैं, परंतु पति-पत्नी में जो चीज होती है, जो चीज होनी चाहिए वह हममें कब की समाप्त हो चुकी है। और अगर मैं ठीक कहूँ, तो वह चीज कभी थी ही नहीं।''[6] वह चीज याने विश्वास और प्रेम। दोनों में विश्वास और प्रेम का अभाव ही उनके संबंधों को टूटने की या अलग रहने की हद तक ले जाते हैं, लेकिन मोहन राकेश जी की जीवन के प्रति जो आस्था है

वह इनके संबंधों को अंत तक बचाए रखती है। अतः महानगरों में बसनेवाले मध्यवर्गीय परिवार के खोखले दांपत्य जीवन का दर्शन 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में होता है।

निर्मल वर्मा के कथा साहित्य में आधुनिक जीवन का चित्रण है। इसमें आधुनिक जीवन व्यतीत करनेवाले स्त्री-पुरुष बंधन से मुक्त जीवन जीना चाहते हैं। मध्यवर्ग परिवार में घरेलू संबंध टूटते जा रहे हैं। पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, भाई-बहन, माँ-बेटी आदि के संबंध टूट रहे हैं। उसी तरह दांपत्य संबंध अनेक कारणों से पीड़ित और तनावग्रस्त हैं। भौतिक सुविधाओं से संपन्न होते हुए भी अपने जीवन में सुखी नहीं हैं। निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास का कथानायक 'मैं' (इंदी) ने अपने परिवार से संबंध तोड़ दिए हैं। उसे घर के लोगों से कुछ भी लगाव या प्यार नहीं है। वह कहता है- "मैं घर के बारे में नहीं सोचता। मैं सोचता हूँ, एक उम्र के बाद तुम घर वापस नहीं जा सकते। तुम उसी घर में वापस नहीं जा सकते जैसे तुमने उसे छोड़ा था।"[7] स्पष्ट है इंदी ने अपने को घर से काट दिया है। टी. टी. घर वापस नहीं जाना चाहता, घर की याद उसे पीड़ा देती है। पारिवारिक अलगाव के साथ 'वे दिन' उपन्यास में टूटते दांपत्य जीवन का भी चित्रण है। द्‌वितीय विश्वयुद्‌ध के आतंक से मनुष्य आज भी मुक्त हो नहीं पाया है। 'वे दिन' की रायना और जाक युद्‌ध से शापित हैं। उनमें जो भय और अविश्वास है वह दोनों को साथ रहने नहीं देता है। रायना जाक को छोड़कर शहर-दर-शहर घूमती है, जहाँ वह पुरुष-दर-पुरुष बदलती है। रायना अपने पति के साथ भय के कारण ही नहीं रहती है।

आधुनिक परिवेश में व्याप्त उन समस्याओं को चित्रित करने में मन्नू भंडारी सक्षम रही हैं। आज का हर एक परिवार तथा व्यक्ति खंडित हो रहा है। डॉ. किशोर गिडकर मन्नू जी के कथा-साहित्य में चित्रित समस्याओं के संदर्भ में कहते हैं- "मन्नू भंडारी ने अपने कथा-साहित्य में जिन समस्याओं को उठाया है, उनका कोई स्पष्ट हल उन्होने प्रस्तुत नहीं किया, परंतु उन समस्याओं को एकाग्रता से प्रस्तुत किया है। इतना निर्विवाद सत्य है कि मन्नू जी ने जो भी लिखा है वह उनका देखा, परखा और भोगा हुआ है।"[8] स्पष्ट है मन्नू जी का साहित्य स्वानुभूति तथा परिवेश की देन है। मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' में मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण किया है, इसमें चित्रित अजय और शकुन का परिवार अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। विघटन की दौर से उनका परिवार गुजर रहा है। अजय और शकुन में हमें सामंजस्य का अभाव है। एक-दूसरे को पराजित

करने की मनोवृत्ति, अहं का अधिक्य और गलत निर्णय लेने के कारण उनका परिवार टूट जाता है। शकुन का कथन इसकी पुष्टि देता है- ''शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का एहसास दोनों के मन में बहुत साफ होकर उभर आया था, जिस पर हर दिन और हर घटना ने केवल सान ही पढ़ाई थी। समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था, वरन् एक-दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की अकांक्षा से।''[9] स्पष्ट है, दोनों के अहंभाव, गलत निर्णय के कारण उनका परिवार बिखर जाता है। एक-दूसरे के प्रति विश्वास एवं प्रेमभाव की कमी है। इन दोनों के अहं के कारण बंटी का जीवन तबाह हो जाता है। इनके विघटन का वह शिकार हो जाता है। उसका व्यक्तित्व खंडित बन जाता है।

अतः स्पष्ट है आलोच्य उपन्यासों में परिवार एवं टूटते दांपत्य जीवन की समस्या को प्रधान रूप में चित्रित किया है। आज महानगरीय मध्यवर्गीय परिवार में शिक्षित नारी-पुरुषों के अहं, स्वतंत्र व्यक्तित्व, अस्तित्व के सवाल और सामंजस्य के अभाव के कारण अनेक परिवार टूट चुके हैं, टूट रहे हैं। आज परिवार एवं दांपत्य विघटन की समस्या भयावह रूप लेकर समाज की जड़ों को हिला रही है।

5.2 अकेलेपन की समस्या -

मनुष्य समाजशील प्राणी है। वह समाज में रहते हुए अपना कार्य करता है। अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करता है। आधुनिक जीवन के गतिमानता और दौड़-धूप से समाज में घुटन और अकेलेपन की भावना बढ़ रही है। आज व्यक्ति समाज में रहकर भी खुद को अकेला और निसहाय समझता है, इसी को ही 'अकेलापन' कहा जाता है। मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी-कभी खुद को अकेला महसूस करता है। परिस्थिति के दबाव में आकर उसके मन में घुटन पैदा होती है। आज महानगरों में अकेलेपन की समस्या ने गंभीर रूप धारण किया है।

'शह और मात' में उदय, सुजाता, अपर्णा और मुलायमसिंह आदि में अकेलेपन की भावना दिखाई देती है। उदय में अपने जीवन संघर्ष, निराशा तथा असफल प्रेम के कारण अकेलेपन की पीड़ा दिखाई देती है। इस पीड़ा से सबसे ज्यादा प्रभावित पात्र सुजाता है। सुजाता को भी प्रेम में तेज ने धोखा दिया है। तेज की याद उसे अकेला बनाती है। वह कहती है- ''जाने क्यों, तेज की बहुत याद आ रही है। रह-रहकर मन-उचट जाता है।''[10] प्रेम की असफलता ने

उसके दिल को गहरी चोट पहुँचाई है। उदय के साथ होने पर या परिवार में सबके बीच रहते हुए उसे अकेला-अकेला लगता है। उसके मन में हर वक्त अजीब-सी बेचैनी छायी रहती है। अकेलेपन की पीड़ा ने उसे सभी से अलग कर दिया है। अपर्णा भी अपने परिवार, पति से दूर हो चुकी है, उसमें भी गहरा अकेलापन दिखाई देता है।

'अंधेरे बंद कमरे' में पात्रों की प्रधान पीड़ा है- परिवेश से कट जाना या अकेलापन। हरबस, नीलिमा, मधुसूदन, सुषमा, शुक्ला, जीवन भार्गव आदि पात्र अकेलेपन की पीड़ा के शिकार हैं। हरबंस में अकेलापन, खालीपन, अजनबीपन, अलगावबोध स्पष्ट झलकता है। हरबंस जब परिवार एवं नीलिमा के साथ रहता है तब वह खुद को अकेला एवं सबसे कटा हुआ महसूस करता है। इस अकेलेपन को दूर करने के लिए डॉक्टरी पढ़ने का बहाना बनाकर लंदन चला जाता है लेकिन वहाँ जाकर और अकेला हो जाता है। उसके लंबे-लंबे खत उसके अकेलेपन को स्पष्ट करते हैं। वह नीलिमा को खत लिखकर बताता है कि "मेरी मनस्थिति बहुत विचित्र हो रही है। एक तरफ देखता हूँ, तो हम लोगों के सहजीवन की यंत्रणा और प्रताड़ना नजर आती है और दूसरी तरफ यह निगलता हुआ सूनापन है- भीड़ से लदी हुई दुनिया के बीच अपना अकेलापन।"[11] हरबंस की विवशता, पीड़ा आधुनिक दांपत्य जीवन की सबसे बड़ी विडंबना है। हरबंस के दांपत्य जीवन की अशांतता, मानसिक तनाव, घुटन, निराशा ही उसमें अकेलापन भर देती है। हरबंस की तरह नीलिमा में भी अकेलापन दिखाई देता है लेकिन नीलिमा का व्यक्तित्व खुला और स्वतंत्र होने के कारण वह इस पीड़ा को अपने उपर हावी होने नहीं देती। मधुसूदन भी सबके बीच रहकर अकेला है। इसलिए एक अस्त-व्यस्त यांत्रिक जीवन जीने के लिए विवश है। परिचितों के बीच भी उसे अजनबीपन महसूस होता है। वह कहता है- "मगर उनके पास बैठकर भी मुझे महसूस होता रहा कि हम लोगों के बीच कहीं एक लकीर है बहुत पतली-सी लकीर जिसे हम चाहकर भी पार नहीं कर पाते।"[12] मधुसूदन में जो अलगाव बोध की भावना दिखाई देती है जिससे महानगरों में रहनेवाले सभी व्यक्ति पीड़ित हैं। अकेलेपन की भावना में जीने के लिए महानगरीय व्यक्ति अभिशप्त है, इस समस्या का कोई हल उसके पास नहीं है। यही भावना उसमें एक भटकन पैदा करती है एक अंतहीन भटकन।

निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास का प्रत्येक पात्र अकेलेपन की अभिशप्त नियति को ढोने के लिए विवश है। डॉ. रघुनाथ शिरगांवरकर लिखते हैं- " 'वे दिन' संपूर्ण रूप से मनुष्य के अकेलेपन और उसे बाँटने की नाकाम कोशिशों पर लिखा गया संवेदनशील उपन्यास है।"[13] उपन्यास में 'मैं' (इंदी), टी. टी. (थानथुन), रायना, मीता, मारिया, फ्रान्ज सभी अकेलेपन की भावना से ग्रस्त है। इस समस्या को लक्ष्य करते हुए बाबू जोसेफ लिखते हैं- " 'वे दिन' उपन्यास का मूल स्वर मनुष्य के अकेलेपन एवं अलगाव-बोध का है।"[14] अतः पूरे उपन्यास में अकेलेपन की पीड़ा को निर्मल वर्मा ने गहरी रेखाओं से उकेरा है। उपन्यास के सभी पात्र अपने संबंधों में एक प्रकार की रीक्तता एवं तटस्थता को सहते हुए दिखाई देते हैं, उनका जीवन अजनबियों के समान है। कथानायक में (इंदी) परिवेश से कटा हुआ एकरस उबाऊ जिंदगी जी रहा है। उसके सामने न कोई राह है न उद्देश्य। एक अर्थहीन भटकन और उसे भूलावे में डालने के लिए स्लिवेबित्से, चियान्ती, कोन्याक, बियर आदि का झूठा सहारा यही मानो उसका जीवन हो गया है। उपन्यास के अन्य पात्र रायना, फ्रान्ज, मारिया, टी. टी. भी अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए शराब का सहारा लेते हैं। रायना के अतीत को सुनकर कथानायक कहता है- "हम दोनों अँधेरे में सहसा अकेले हो गए थे... अकेलापन- जो दुःख, पीड़ा, आँसुओं से बाहर है- जो महज जीने के नंगे बर्नेल आतंक से जुड़ा है... जिसे दूसरा व्यक्ति निचोड़कर बहा नहीं सकता।"[15] इससे स्पष्ट होता है पात्रों में जो भय है वास्तविक रूप से वह अकेले हो जाने का भय है। इस अकेलेपन के अभिशाप से बचने के लिए वे घुमते हुए दिखाई देते हैं। रायना पति जाक द्वारा परित्यक्ता नारी है और वह अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए इधर-उधर जाती है। रायना के अतीत में आतंकपूर्ण अंधेरे का भय, बंदूक का आतंक और मौत का अकेलापन दिखाई देता है। युद्ध का गहरा आघात और जाक से अलगाव रायना को तटस्थ, अजनबी, आत्मनिर्वचनीय और आत्मनिर्वासित बना चुका है। टी. टी., फ्रान्ज, मारिया भी प्राग के यांत्रिक परिवेश में उपस्थित होने-से अजनबीपन की पीड़ा भोग रहे हैं। उपन्यास के सिर्फ पात्रों में ही अकेलापन नहीं है तो निर्मल वर्मा ने उपन्यास के पूरे परिवेश एवं वातावरण के चित्रण में अकेलापन भर दिया है जो पात्रों के अकेलेपन को गहराई से प्रस्तुत करता है। इसे पूरे उपन्यास की मूल अनुभूति युद्धोत्तर युरोपीय पीढ़ी के अलगाव एवं अकेलेपन की है।

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन और बंटी में अकेलेपन की भावना हमें सबसे अधिक दिखाई देती है। शकुन का वैवाहिक जीवन निराशा से भरा हुआ है। शकुन अजय से कट कर सभी से और खुद से कट गई हो। शकुन समाज में रहकर भी खुद को अकेला, असहाय, टूटा हुआ महसूस करती है। वह सोचती है- ''समय जैसे ठहरकर जम गया है और जमे हुए समय की यह चट्टान न कहीं से पिघलती थी, न टूटती थी। बस, टूटती रही है तो शकुन- धीरे-धीरे, तिल-तिल।''[16] स्पष्ट है इस अकेलेपन की भावना ने उसे खोखला एवं कमजोर बना दिया है। वह अजय से पराजित नहीं होती लेकिन अजय को पराजित न करने की भावना ने उसे गहरी पीड़ा दी है। अकेलेपन की भावना उसमें अपमान की पीड़ा को बढ़ाती है . ममी-पापा की अनबन बंटी को अकेला बना देती है। हर वक्त डरा-डरा सहमा-सहमा रहता है। डॉ. जोशी के घर में जाकर सब लोगों में बंटी अजनबी एवं अकेला बन जाता है। जैसे- ''अपने घर से उखड़कर बंटी जैसे सब जगह उखड़ गया, क्लास में बैठा रहता है तो मन में घर तैरता है... ममी, अमि, ममी का कमरा, कमरे का जादू... और भी जाने क्या क्या। सबके बीच होकर भी वह सबसे कटा-छँटा, अलग-थलग सबको देखता रहता है।''[17] अकेलेपन के कारण उसके मन में निराशा अंतर्द्वंद्व तथा अपमान की भावना बढ़ती है। वह खुद को हीन एवं महत्त्वहीन समझने लगता है।

स्पष्ट है आलोच्य उपन्यासों में अकेलेपन को भोगने के लिए पात्र विवश दिखाई देते हैं। आज महानगरों में प्रत्येक व्यक्ति अकेलेपन, अलगाव एवं अजनबीपन की भावना से पीड़ित है। इस अकेलेपन के कारण मानव का जीवन स्वयं के लिए एक बोझ-सा लगता है और इस बोझ को अकेले ढोने की चिंता ने मानव के भीतर एक गहरी वेदना, घुटन संत्रास एवं आतंक को पैदा किया है। इस पर एक ही उपाय लगता है वह है पुनः पारिवारिक प्रेम, अपनत्व की भावना को बढ़ावा देना, संयुक्त परिवार की स्थापना करना, यही संदेश दिया है।

5.3 अंतर्द्वंद्व एवं दुर्बल मानसिकता की समस्या -

अधूरी इच्छाओं और अभिलाषाओं की पूर्ति के मध्य संघर्ष की दुःखपूर्ण अवस्था को द्वंद्व कहते हैं। निर्णय की अनिश्चितात्मक स्थिति को भी 'द्वंद्व' कहा जाता है। डॉ. मंजुला गुप्ता के अनुसार- ''व्यक्ति बाह्य जगत् अर्थात भौतिक जगत के प्रभाव से तो संघर्षरत हो ही उठता है, परंतु वह अपने मस्तिष्क में उठ रही दो विरोधी भावनाओं के मंथन से भी संघर्षरत हो

उठता है जिसे अंतर्द्वंद्व कहा जाता है।''[18] दुर्बल मानसिकतावाले लोगों को निर्णय लेने में कठिनाई होती है।

'शह और मात' उपन्यास डायरी शैली में होने के कारण इसमें सुजाता के अंतर मन को खोलकर रखा गया है। उसके मन के भाव, आंतरिक संघर्ष एवं उसके सोच को सूक्ष्मता से रूपायित किया है। उपन्यास में उदय और सुजाता दोनों में कमजोर मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्व की समस्या दिखाई देती है। सुजाता के मन में हर वक्त उदय और तेज के चुनाव या तुलना को लेकर संघर्ष रहता है। ज्यादा सोच के कारण सुजाता असमंजस्य की स्थिति में रहती है। सुजाता के नारी रूप और लेखिका रूप में भी हमें संषर्घ दिखाई देता है। वह सोचती है- ''खुद चाहती हूँ कि रचना के बल पर जाँचो, मगर यह मत भूलो कि मैं लड़की हूँ। अजब द्वंद्व है।''[19] सुजाता उदय पर कहानी लिखना चाहती है लेकिन उसका नारी रूप उसे चाहने लगता है। इसी वजह से लेखिका का कर्तव्य वह निभा नहीं पाती है। सुजाता की फालतू सोच भी उसकी दुर्बल मानसिकता का परिचय देती है। उदय का व्यक्तित्व भी हमें खंडित रूप में दिखाई देता है। राजेंद्र यादव जी का कहना है कि 'शह और मात' मेरी समझ में केवल उदय की मानसिक उलझन की कहानी है।''[20] उपन्यास व्यक्ति और लेखक का द्वंद्व अर्थात 'कर्ता' और 'दृष्टा' के आपसी संबंधों और संघर्षों का रूपक है, जिसे आज की भाषा में विषय-निष्ठता और पात्र-निष्ठता की समस्या कहना होगा। लेखक और व्यक्ति के इस द्वंद्व में व्यक्ति ही हारता है। सुजाता की चली चाल में लेखक उदय जीत जाता है फिर भी उसे अपनी जीत से ग्लानि होती है क्योंकि अपने में नीहित लेखक उदय को सुरक्षित रखने के लिए उसे सुजाता के साथ आए अपने जीवन के कोमल, भावुक क्षणों में, प्रेम-प्रसंगों में तटस्थ, भावना शून्य, निर्दय और क्रूर होना पड़ता है। उसमें नीहित व्यक्ति उदय को जीवन के आनंद से वंचित रहना पड़ता है। वह स्वयं को पराजित समझता है और अपने इस मानसिक द्वंद्व को डायरी में लिखता है- ''मुझे लगता है कि कलाकार सब कुछ हो सकता है- खुद वह 'आदमी' हो ही नहीं सकता। हाँ वह 'आदमी' का दूत होता हो तो हो।''[21] उदय का यह कथन उपन्यास के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करता है। लेखक और व्यक्ति के द्वंद्व में उलझे उदय को मानसिक व्यथा को व्यक्त करना उपन्यास का प्रधान प्रतिपाद्य है।

'अंधेरे बंद कमरे' में सभी पात्र दुर्बल मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्व के शिकार दिखाई देते हैं। डॉ. बाबू जोसेफ इस के संदर्भ में लिखते हैं- " 'अंधेरे बंद कमरे' हरबंस और नीलिमा के अंतर्द्वंद्व की कहानी है।"[22] हरबंस और नीलिम के चरित्र में द्वैध है, विकल्प है और उनके सामने अनेक समस्याएँ भी हैं, जिनसे संघर्ष उन्हें अकेले करना पड़ता है। हरबंस में निर्णय की क्षमता कम दिखाई देती है। हरबंस अंतर्द्वंद्व के कारण निर्णय की अनिश्चयात्मक स्थिति का सामना उसे करना पड़ता है। वह जीवन में एक साथ बहुत कुछ करना चाहता है लेकिन उसके हाथ में कुछ भी नहीं आता है। वह अपने मन के अंतर्द्वंद्व को उपन्यास के रूप में रखना चाहता है लेकिन कुछ लिख नहीं पाता है- "मुझे कुछ समझ नहीं आता कि मैं क्या चाहता हूँ ? कोई चीज है जिसे मैं बहुत शिद्दत के साथ महसूस करता हूँ मगर... मगर मैं जब लिखना चाहता हूँ, तो मुझसे कुछ भी लिखा नहीं जाता।"[23] मानसिक द्वंद्व के कारण वह निराश एवं दुःखी रहता है। हरबंस नीलिमा के साथ और नीलिमा के बगैर भी रह नहीं सकता है। अपनी कमजोरी के कारण वह हर वक्त सहारा ढूँढ़ता है। लंदन से नीलिमा को लिखे खत उसके दुर्बल मानसिकता एवं अंतद्वंद्व को स्पष्ट करते हैं। नीलिमा में भी पत्नी रूप एवं नारी रूप का द्वंद्व दिखाई देता है। अपने निर्णय लेते समय उसे भी मानसिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है। मधुसूदन और सुषमा श्रीवास्तव में भी अंतर्द्वंद्व है।

'वे दिन' उपन्यास के टी. टी., फ्रान्ज, मारिया आदि के मन में भी द्वंद्व है। कथानायक रायना तथा उसके अतीत को लेकर उलझता है। उसके मन में रायना के स्वभाव को लेकर द्वंद्व है। वह हर वक्त अपने और रायना के संबंधों के बारे में सोचता है- "रायना ! मैं ने धीरे से फुसफुसाकर कहा- अपने से ही- मानो नाम लेने से ही अंधेरे में उस पर अँगुली रख सकूँगा, जो बहुत बाहर है और भीतर भी।"[24] 'वे दिन' तो आदमी के अंतरमन की कथा है। आदमी के मन में निर्माण होनेवाले अकेलेपन, अजनबीपन, अलगावबोध, संत्रास, भय, कुंठा, घुटन की कहानी है। इसमें मानवी मन का संघर्ष है। टी. टी के मन में अपनी माँ तथा अपने देश के बारे में संघर्ष है। फ्रान्ज मारिया के साथ रहता तो है लेकिन उसके साथ विवाह नहीं कर पाता है वही मारिया की भी यही हालत है। युद्ध के कारण सभी पात्र मानसिक संघर्ष झेलने के लिए विवश हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन, बंटी और अजय के मन में द्वंद्व दिखाई देता है। उपन्यास में शकुन में सबसे अधिक अंतर्द्वंद्व दिखाई देता है। निर्णय की अनिश्चयात्मक स्थिति शकुन के द्वंद्व को स्पष्ट करती है। अंतर्द्वंद्व के कारण वह निर्णय लेने में असफल होती है। समय बीत जाने पर उसे इस गलती का एहसास होता है। बंटी को होस्टल भेजते समय, अजय को तलाक देते समय और डॉ. जोशी के साथ विवाह करते समय शकुन की दुर्बल मानसिकता एवं अंतर्द्वंद्व को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। दुर्बल मानसिकता के कारण वह निर्णय तो ले नहीं पाती लेकिन जो भी निर्णय लेती है वह गलत साबित होता है। शकुन सोचती है- ''आज अगर उसे किसी बात का अफ़सोस है तो केवल इसी बात का कि यह निर्णय उसने बहुत पहले क्यों नहीं ले लिया ? क्यों नहीं वह बहुत पहले ही इस दिशा की ओर मुड़ गई ? किस उम्मीद के सहारे वह सात साल तक यों घिसटती रही ? सात साल का वह जीवन मात्र घिसटना ही तो था, घिसटना और तिल-तिल करके टूटना।''[25] स्पष्ट है गलत निर्णय एवं द्वंद्व के कारण नीलिमा के जीवन में दुःख, निराशा एवं अविश्वास, अपमान की भावना बढ़ जाती है। शकुन की तरह 'बंटी' में भी मानसिक संघर्ष दिखाई देता है। वह छोटी-सी उम्र में सयाना बन जाता है। ममी-पापा के संबंध, ममी के स्वभाव, पापा के स्वभाव तथा ममी और डॉ. जोशी के संबंधों को लेकर बंटी हर वक्त उलझा रहता है। बंटी न पापा के साथ रह सकता है न ममी के साथ। उसका द्वंद्व उसमें प्रतिशोध, विरोध एवं दुःख की भावना भर देता है।

अतः स्पष्ट है आधुनिक युग की गतिमानता ने मानवी मन की सुख, शांति छीन ली है। आज मानव बाह्य स्थितियों से संघर्ष तो कर ही रहा है लेकिन इस बाह्य संघर्ष से ज्यादा उसे आज अपने-आप से कड़ा संघर्ष करना पड़ रहा है। मानसिक संघर्ष के कारण आज समाज में मानव के स्वभाव में विक्षिप्तता आ रही है। मनोरुग्णों की संख्या बढ़ रही है। चारों उपन्यासों में पात्र इसी भावना के शिकार दिखाई देते हैं। सभी पात्र अंतर्द्वंद्व एवं दुर्बल मानसिकता के कारण न घर में सुखी जीवन जीते हैं न ही घर के बाहर। आज अंतर्द्वंद्व की समस्या गंभीर रूप लेकर हमारे सामने आ रही है।

5.4 अहं की समस्या -

मानव सामाजिक प्राणी होने के कारण उसकी कई विशेषताएँ रही हैं। अपने अस्तित्व की अभा रखने की उनकी प्रवृत्ति है। अस्तित्व का भाव उनके अहं का प्रतीक है अर्थात् हर एक जीव की यही प्रवृत्ति है। जब स्वत्व पर हमला होता है तब वह संघर्ष करता है, परंतु जहाँ आवश्यकता नहीं वहाँ जब दूसरों को पीड़ा देता है, दूसरों पर अत्याचार, अन्याय करता है तब अहं के दर्शन होते हैं। आज के भौतिक विकास के युग में अपनत्व, प्रेम, वात्सल्य आदि भाव कम हो रहे हैं और अहं का विकास हुआ है, जो समाज व्यवस्था तथा सामाजिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है। मध्यवर्ग में आज इसके दर्शन हो रहे हैं, साहित्यकारों ने इस समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। अपनी रचनाओं के द्वारा इस पर प्रकाश डालकर उसकी स्थिति एवं गति को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। आलोच्य उपन्यास इसके प्रमाण हैं। उस पर यहाँ हम विचार करेंगे -

'शह और मात' उपन्यास में अहं की भावना से पीड़ित उदय और सुजाता हैं। दोनों को अपनी काबिलियत और लेखक होने पर गर्व है। सुजाता उदय से प्रेम तो करती है लेकिन अपने अहं के कारण व्यक्त नहीं कर पाती है। उसे लगता है उदय ही उसके सामने प्यार का इकरार करेगा, वह ही उसे मिलने आएगा। जब उदय को घर बुलाने पर भी वह नहीं आता तब सुजाता के अहं को ठेस पहुँचाती है। वह उदय को पीड़ा देना चाहती है, उस पर उपन्यास लिखना चाहती है। वह सोचती है- ''क्यों न उदय जी को ही घसीट डाला जाए। बड़ा अपने को उपन्यासकार समझता है, इससे इनको यह भी पता लग जाएगा कि मैं भी सचमुच इंटैलिजैंट और समझदार हूँ, 'यों बेचारी लड़की नहीं हूँ।' ''[26] स्पष्ट है जब जब उदय उसे नजरांदाज करता है तब-तब सुजाता में अपमान की पीड़ा से उसका अहं जागृत हो जाता है। उदय में भी अहं की भावना है जो उसमें कम उम्र में यश की प्राप्ति के कारण पैदा हुई है। सुजाता उदय के संबंध में कहती है- ''सचमुच, ऐसा ठंड़ा-निर्जीव और अपने में ही डूबा रहनेवाला, सिर्फ अपनी-ही-अपनी बातें करनेवाला आदमी तो मैंने आज तक देखा ही नहीं कभी। कैसे ऐसे दंभी और अहंकारी आदमी से इतनी बार मिल सकी मैं।''[27] उदय इसी अहं के कारण सुजाता पर चाल चल के उपन्यास लिखता है, लेकिन जीतकर भी हार जाता है, दुःखी हो जाता है। यह सच है अहं का अंत दुःख और हार में हुआ है।

अहं आज के शिक्षित व्यक्ति की प्रधान समस्या है। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में नीलिमा और हरबंस के दांपत्य जीवन में दरारें आने का मूल कारण उनका अहं है। दोनों अपने अहं को पोषित करने के लिए एक-दूसरे को सामने झूकने को तैयार नहीं हैं। इस अहं के कारण वे जीवन से कटते जाते तथा निरंतर अकेले एवं एकरस जिंदगी जीते हैं। उनकी यह समस्या स्वर्जित है। हरबंस प्रारंभ में नीलिमा को आधुनिक बनाने की चक्कर में पार्टियों, कॉफी हाऊसों की बहसों में आने के लिए प्रोत्साहित करता है। नीलिमा को पेंटींग और नृत्य की ओर प्रेरित करता है, परंतु यह सब वह अपने अहं को पोषित करने के लिए करता है। जब उसके अहं पर चोट पहुँचने का खतरा निर्माण होता है तो वह कतराकर भाग खड़ा होता है। अपने अहं के कारण ही वह हर समय नीलिमा को हीन समझता है, प्रताड़ित करता है, अपमानित करता है। इन स्थितियों के कारण दोनों में प्रेम, विश्वास और समर्पण, त्याग का अभाव निर्माण होता है। परिणामस्वरूप दोनों का दांपत्य जीवन टूटने लगता है। नीलिमा में भी अहं भावना की प्रधानता है। वह स्वतंत्र व्यक्तित्ववाली आधुनिक नारी है। उसकी अपनी अपेक्षाएँ हैं। वह हरबंस के सामने झुकना पसंद नहीं करती है। वह अपने निर्णय खुद लेती है। वह हरबंस के द्वारा उसके अहं को ठेस पहुँचाने पर कहती है- "मैं अब अपने मन से उस रास्ते पर इतना चल आयी हूँ कि लौट नहीं सकती- तुम्हारे कहने से और तुम्हारे हित के लिए भी नहीं।"[28] स्पष्ट है नीलिमा अपने अहं के लिए परिवार एवं बंटी का जीवन भी नष्ट कर डालती है। अतः दोनों के अहं भाव के कारण उनका जीवन अशांत, घुटन, संत्रास, रीक्तता से भर जाता है।

पति-पत्नी के बीच में अहं की भावना नहीं होनी चाहिए। अहं के न होने पर ही दोनों में मेल तथा सामंजस्य हो सकता है। दोनों सुखी जीवन जी सकते हैं। 'आपका बंटी' उपन्यास में पत्नी शकुन और पति अजय में अहं की प्रधानता है। इन दोनों के अहं का परिणाम बेटा बंटी पर पड़ता है और बंटी में भी अहं की भावना बढ़ती है। इस अहं के कारण ही शकुन और अजय के पारिवारिक जीवन में दरारें निर्माण होती हैं, जो एक-दूसरे को अलग कर देती है। शकुन अहं के कारण ही अजय को अपमानित करना चाहती है, उसे पीड़ा, दुःख देना चाहती है और इसी प्रयास में रहती है- "... सच पूछा जाए तो अजय के साथ न रह पाने का दंश नहीं है, वरन् अजय को हरा न पाने की चुभन है, जो उसे उठते-बैठते सलती रहती है।"[29] इसी अहं तथा अजय को

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

पराजित न कर पाने की भावना शकुन को जो जीवन भर सताती है। अंत में वह खुद ही पराजित हो जाती है। वह जो कुछ भी करती है अजय को पराजित करने के लिए। जैसे- प्रिन्सिपल बनना, डॉ. जोशी से विवाह आदि। अजय भी अपने अहं के कारण ही वैवाहिक जीवन में सफल हो नहीं पाता है। वह शकुन से पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है लेकिन खुद उसे हीन समझता है। इन दोनों के अनबन और बरताव से बंटी में भी अहं की भावना बढ़ती है। बंटी में जो विरोध, प्रतिशोध एवं अहं की भावना बढ़ी है, वह उन दोनों के खंडित व्यक्तित्व तथा तनावपूर्ण पारिवारिक संबंधों की देन है। इस उपन्यास के जो भी समस्याएँ निर्माण हुई हैं उसके मूल में हमें अहं की भावना दिखाई देती है।

अतः आज मध्यवर्गीय व्यक्तियों में बदला लेने की प्रवृत्ति और अहंभाव ही टूटते परिवार एवं दांपत्य विघटन का प्रमुख कारण है। आज हर कोई एक-दूसरे को झुकाना चाहता है लेकिन खुद झुकना पसंद नहीं करता है। इसी कारण पारिवारिक प्रेम का अभाव है, इसकी ओर उपन्याकसरों ने संकेत किया है।

5.5 हीनता एवं घृणा की समस्या -

मध्यवर्ग में जिस तरह से अहं का भाव है उसका दूसरा रूप हीनता एवं घृणा है। दूसरे को कम माननेवाली यह नीति न खुद को बड़ा करती है न सुख देती है। आज के सक्रिय समाज व्यवस्था ने इस समस्या को बल दिया है। अपने आपको ज्ञानी, बुद्धिमान समझनेवाला मानव घृणित भाव से दूसरों को देखता है, जिससे व्यक्ति-व्यक्ति में दरारें बढ़ रही हैं। सामाजिक, पारिवारिक एकता के लिए यह खतरा है। आलोच्य उपन्यासकारों ने इस पर सोचा है।

'शह और मात' उपन्यास में उदय और सुजाता दोनों में हीन भाव दिखाई देता है। सुजाता जब-जब उदय से प्रताड़ित एवं दुर्लक्षित हो जाती है तब-तब खुद को हीन समझती है। सुजाता अपने और उदय के बारे में गंदी बातें सोचती है तब उसके मन में हीनताबोध दिखाई देता है। सुजाता सोचती है- ''हीनता और व्यर्थता को कचाटे जहाँ मन को बोझील बना रही है और उसे क्षुब्ध झुँझलाहट के रूप में बाहर बिखेर देना चाहती हूँ।''[30] हीनता बोध से खुद के सोच के प्रति घृणा निर्माण होती है। उदय सुजाता को चाल में हराता है लेकिन वह विजयजन्य ग्लानि का शिकार हो जाता है। वह खुद को गिरा हुआ, छोटा और हीन समझने लगता है।

हीनता बोध या हीनता का भाव आदमी के अन्य से छोटा महसूस कराता है। 'अंधेरे बंद' कमरे उपन्यास में हरबंस में हीनता की भावना दिखाई देती है। वह खुद के निष्क्रीयता एवं निठ्ठलेपन को छुपाने के लिए नीलिमा को प्रताड़ित करता है, उसे दुःख, पीड़ा देता है उसके प्रत्येक कार्य का विरोध करता है। हर समय वह सभी के बरताव एवं कार्य पर कुढ़ता रहता है। नीलिमा इस स्वभाव से तंग आकर कहती है- ''तुम सिर्फ इस हीन-भावना के शिकार हो कि लोग मुझे तुमसे ज्यादा जानते हैं और उनमें जो बातें होती है वह तुम्हारे विषय में न होकर मेरे विषय में होती है। तुम्हें यह बात खा जाती है कि लोग तुम्हारी चर्चा नीलिमा के पति के रूप में करते हैं।''[31] इस स्वभाव के कारण ही वह कार्य सफलता से कर पाता है न दूसरों को सफलता से करने देता है। नीलिमा और हरबंस का दांपत्य जीवन बिखरने का यह एक महत्त्वपूर्ण कारण था।

'आपका बंटी' उपन्यास में शकुन और बंटी में हीनता एवं घृणा की भावना दिखाई देती है। अजय के प्रताड़ित करने पर शकुन में हीन भाव उत्पन्न होता है। अजय के अहं का वह शिकार बनती है। वह हीन भावना के कारण अजय को पराजित करने एवं उससे प्रतिशोध लेने की भावना बढ़ती है। दूसरे के घर में खुद को कम समझने की प्रवृत्ति है। बंटी इसका प्रमाण है। डॉ. जोशी के घर में वह उपेक्षित निसहाय, फालतू समझता है। इसी वजह से हीन भावना उसे हर समय कचोटती रहती है। डॉ. जोशी के घर में वह खुद को महत्त्वहीन और उपेक्षित समझती है। शकुन जोशी के घर में बंटी के साथ जो बरताव करती है उससे बंटी में हीनताबोध बढ़ता है। डॉ. जोशी और ममी को नंगधडंग देखने पर उसके मन में घृणा की भावना उत्पन्न होती है। वह सोचता है- ''और ममी भी देख रही हैं। शरम नहीं आ रही है इन लोगों को ? उसे जैसे मितली-सी आने लगी... पर आँखें हैं कि फिर भी बंद नहीं हो रहीं।''[32] शकुन और जोशी को नंग-धडंग देखकर बंटी के मन में जुगुप्सा, शकुन के इस व्यवहार से शर्म तथा गुस्सा भी आता है। दो चार दिन तक उसका बाल मन विक्षिप्त स्थिति में पहुँच जाता है।

अतः स्पष्ट है आज समाज में सुख की संकल्पना बदल गई है। सभी लोग अपने पास जो है, जितना है उसको आधा-अधूरा समझते हैं। दूसरे व्यक्ति के यश से दुःखी होते हैं। इसी मानसिकता के वजह से आज प्रत्येक व्यक्ति अपने आपको हीन एवं छोटा महसूस करने लगा है। इस हीनता बोध के कारण उनके व्यक्तित्व का सही तरीके से विकास नहीं हो पा रहा है। प्रत्येक

व्यक्ति का व्यक्तित्व कुंठित बन रहा है। इसी पाने की लालसा ने अपनत्व खो दिया है, यही संदेश दिया है। इसका परिणाम नई पीढ़ी पर हो रहा है, बंटी इसका प्रमाण है।

5.6 प्रेम की समस्या -

'प्रेम' यह परिकल्पना व्यापक है। समस्त संसारिक संबंध इसी प्रेम के बल पर विद्‌यमान है। इसमें परस्पर सहयोग, सुख-दुख की भावना नीहित रहती है। प्रेम के अभाव में व्यक्ति की आत्मा बुझी हुई एवं कुंठित बन जाती है। ऐसी स्थिति में स्नेह की आवश्यकता होती है। करुणा, सहानुभूति से जीवन पूर्ण नहीं बनता है मगर वह प्रेम से परिपूर्ण बनता है। पेम मानव की कोमलतम् मनोभावना है लेकिन आज के युग में यही प्रेम एक गंभीर समस्या के रूप में हमारे सामने आ रहा है। आज प्रेम के अभाव के कारण सभी रिश्ते खोखले बन गए हैं। बेटा-माँ की, भाई-बहन की, पति-पत्नी की, भाई-भाई की हत्या कर रहा है। प्रेम की भावना के अभाव के कारण आज मानवी मूल्यों का विघटन एवं विनाश दिखाई दे रहा है। आधुनिकीकरण की इस होड़ में प्रेम की कल्पना भी बदल गई है। आज प्रेम में मतलबी भावना, यौन आकर्षण, शारीरिक भोग ही प्रमुख बन गया है। प्रेम में व्यावहारिकता एवं व्यावसायिकता का प्रवेश हुआ है। प्रेम के नाम पर समाज में एक नई संस्कृति का उदय हुआ है जिसका नाम है 'भोगवादी संस्कृति'। आज युवक-युवतियाँ प्रेम के नाम पर दिशाहीन हो रहे हैं। प्रेम की वजह से आत्महत्याएँ एवं हत्याओं की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। विक्षिप्त मानसिकता में युवक युवतियाँ जीवन जी रही हैं। इसका परिणाम हमें आनेवाली पीढ़ी और परिवार संस्था पर दिखाई देता है। हिंदी के आलोच्य उपन्यासकारों ने इस पर कहाँ तक प्रकाश डाला है उस पर यहाँ हम विचार करेंगे -

'शह और मात' में प्रेम की समस्या पर विस्तार से विचार किया है। आधुनिक युग में प्रेम के बढ़े व्यवहारिक रूप को इसमें स्पष्ट किया गया है। आज प्रेम आत्मिक अनुभवों से न जुड़कर शारीरिक आकर्षणों से जुड़ा दिखाई देता है। 'शह और मात' में असफल प्रेम का चित्रण ज्यादा दिखाई देता है। उपन्यास के प्रमुख पात्र उदय और सुजाता दोनों को प्रेम संबंधों में असफलता मिली है। सुजाता तेज से जान से भी ज्यादा प्रेम करती है लेकिन तेज विदेश में जाकर वहीं शादी कर लेता है। सुजाता तेज की इस बेवफाई से निराश एवं दुःखी हो जाती है। तेज की याद उसे बार-बार सताती है। वह सोचती है- ''तेज, तुम मेरे जीवन के करुण प्रसंग रहे हो। क्या-

क्या सपने मैंने तुम्हारे साथ नहीं देखे थे ? ...कौन-कौन से महल मैंने तुम्हारे लिए नहीं बनाए थे ? और तुमने जो कुछ किया, बदले में एक अविश्वास, एक तल्खी, एक ऐसी चिड़चिड़ाहट मुझे दे दी कि मेरा सारा व्यक्तित्व बिखर उठा और मैं टुकड़ों-टुकड़ों में बँट गई।''[33] प्रेम की असफलता ने सुजाता में अविश्वास, प्रतिशोध, विरोध एवं क्रोध की भावना बढ़ती गई। उसे दूसरे को पीड़ा देने में सुख मिलने लगता है। उदय से प्रेम करने पर भी उसे असफलता ही मिलती है। वह उदय के चाल की शिकार हो जाती है। प्रेम की असफलता का उदय भी शिकार रहा है। उदय रश्मि से प्रेम करता है लेकिन उसकी फटीचर हालत के कारण रश्मि उसे छोड़ देती है। रश्मि की याद उसे पीड़ा देती है। उदय आज के युग में प्यार की बिकट स्थिति को सुजाता के सामने रखता है। प्रेम के संदर्भ में अविश्वास आज के जमाने का अभिशाप बन गया है। उदय प्रेम के संदर्भ में कहता है- ''आज प्रेम बहुत अधिक व्यापारी हो गया है। उसमें हमेशा एक दुविविधा, एक धर्म संकट, ऊपर से दिखावटी और भीतर से निहायत ही हिसाबीपन, साथ ही अपनी इस मनोवृत्ति पर ग्लानि- सब कुछ मिलाकर शायद आज के प्रेम की तस्वीर है।''[34] स्पष्ट है आज प्रेम के नाम पर खोखले संबंध जोड़े जा रहे हैं जिसकी नींव इतनी कमजोर है कि सामान्य समस्या या कठिनाई जीवन में आने पर इसकी इमारत ढह जाती है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में प्रेम एक समस्या के रूप में हमारे सामने आता है। इसमें प्रेम की असफलता, प्रेम में दिखावटीपन तथा खोखले विचार आदि के दर्शन होते हैं। जीवन भार्गव नीलिमा की बहन शुक्ला से प्रेम करता है लेकिन शुक्ला उसके प्यार का इन्कार करती है, वह दुःखी होकर दिल्ली छोड़ देता है। मधुसूदन भी शुक्ला से प्रेम करता है लेकिन प्रेम की विफलता के कारण दिल्ली छोड़कर भाग जाता है। उपन्यास का प्रमुख पात्र हरबंस और नीलिमा का प्रेम विवाह होता है लेकिन विवाह के बाद दोनों में प्रेम समाप्त हो जाता है। नीलिमा और हरबंस के कोर्टशीप के दिन बहुत ही प्यार से और आनंद से गुजरते हैं लेकिन विवाह होने के बाद दोनों में प्रेम के बदले कटुता आ जाती है, दिखावटीपन बढ़ता है। हरबंस के लंबे-लंबे खत उसके दिखावटी प्रेम का दर्शन कराते हैं। उसका यह कहना - ''तुम्हारे साथ और तुम्हारे बिना, दोनों तरह की जिंदगी मुझे असंभव प्रतीत होती है।''[35] उसकी यह अधीरता और मानसिक अस्थिरता उसके प्रेम को नहीं दर्शाती तो उसके शारीरिक भूख और खोखलेपन को स्पष्ट करती है। प्रेम एवं विश्वास के अभाव में

दोनों का दांपत्य जीवन असंतोष एवं दुःख में परिवर्तित होता है। नीलिमा के प्रति हरबंस का जो लगाव और सहानुभूति है वह उसके स्वार्थ के कारण है। नीलिमा उसके खोखलेपन को स्पष्ट करते हुए कहती है- "विवाहित जीवन दो व्यक्तियों का शारीरिक संबंध ही सबकुछ नहीं होता।"[36] अतः प्रेम के अभाव में दोनों का जीवन एक भटकन बन जाता है। दोनों में अस्थिरता दिखाई देती है। दोनों अकेलेपन, अजनबीपन, अलगावबोध, घुटन, संत्रास आदि के शिकार होते हैं, फिर भी एक साथ रहकर अभिशप्त जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर हैं। शुक्ला और सुरजीत के प्रेम में भी अनैतिकता दिखाई देती है, तो मधुसूदन और सुषमा में प्रेम से ज्यादा शारीरिक आकर्षण है। उसी वजह से सुषमा द्वारा विवाह का प्रस्ताव रखने पर मधुसूदन उसे छोड़ देता है। मोहन राकेश ने प्रेम की असफलता, प्रेम का दिखावटीपन, दीशाहीनता, व्यवहारिकता को मार्मिकता से स्पष्ट किया है। प्रेम-विवाह आज गंभीर समस्या का रूप ले रहा है इसका यथार्थ चित्रण हुआ है। पारिवारिक जीवन की सबसे मजबूत नींव होती है- प्रेम और विश्वास, जो आज कमजोर हो गई है। परिणाम स्वरूप परिवार विघटित हो रहे हैं।

'वे दिन' उपन्यास का परिवेश अभारतीय है। निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में प्रेम की परिभाषा एवं संकल्पना को आधुनिक रूप में रखा है। उनके प्रेम की संकल्पना में न तो पवित्रता है, न नैतिकता और न प्रामाणिकता। प्रेम को वह शरीर की भूख के रूप में रखते हैं। उनके उपन्यास में रूमानी प्रेम दिखाई देता है, जिसमें सेक्स, देह की प्यास एवं मुक्तभोग की प्रधानता है। उपन्यास की नायिका रायना पति और प्रेमियों से संबंध रखती है। रायना इंदी के साथ प्रेम नहीं करती लेकिन शारीरिक संबंध स्थापित करती है, जिस में वह नैतिकता अनैतिकता को महत्त्व नहीं देती। प्रेम के अभाव के कारण रायना का मन भटकता रहता है। वह अस्थिर रहती है। प्रेम के अभाव के कारण ही मारिया और फ्रान्ज एक साथ रहते हैं, लेकिन विवाह नहीं कर पाते हैं। जब कथानायक मारिया से फ्रान्ज के साथ विदेश जाने की बात कहता है तो मारिया कहती है- "उसे मेरी जरूरत नहीं है...।"[37] इस उपन्यास में रिश्तों से ज्यादा जरूरतों को महत्त्व दिया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता के इस प्रेम पद्धति का प्रभाव भारतीय जीवन पद्धति पर दिखाई दे रहा है। आज हमारे देश में प्रेम की नींव खोखली बन रही है। प्रेम के नाम पर युवक-युवतियाँ देह की प्यास बुझा रहे हैं, जिसमें नैतिकता का विचार नहीं है।

'आपका बंटी' उपन्यास में मन्नू भंडारी ने प्रेम के खोखलेपन, उसका दिखावटीपन एवं असफल प्रेम का चित्रण किया है। प्रेम दांपत्य जीवन की अधारशीला होती है। अजय और शकुन में प्रेम के अभाव के कारण उनके दांपत्य जीवन में दरारें आ जाती हैं। उनका पारिवारिक जीवन अहं और शक की बुनियाद पर टिका हुआ है जो बाद में टूट जाता है। उसमें एक-दूसरे के प्रति प्रेम, लगाव और अपनेपन का अभाव है। शकुन उन दोनों के संबंधों के बारे में सोचती है- ''प्रेम के नाटक भी हुए थे और तन मन डुबो देनेवाले विभोर क्षणों के अभिनय भी। पता नहीं उन क्षणों में कभी भावुकता, आवेश या उत्तेजना रही भी हो, पर उन दोनों के शंकालु मन ने अभी उसे उस रूप में ग्रहण ही नहीं किया।''[38] स्पष्ट है दोनों ने भी एक-दूसरे से सच्चा प्यार नहीं किया। दोनों ने एक-दूसरे के प्रति अविश्वास दिखाया। प्रेम के अभाव के कारण नका दांपत्य जीवन नीरस बन जाता है।

अतः स्पष्ट है आलोच्य उपन्यासों में प्रेम की असफलता, प्रेम का दिखावटीपन, उसमें आ रही व्यापारिकता एवं व्यावहारिकता की समस्या को चित्रित किया है। आज प्रेम के अभाव के कारण व्यक्ति अमानवीय कृत्य कर रहा है। प्रेम के अभाव एवं असफलता के कारण युवा पीढ़ी निराश हो रही है। आज मध्यवर्गीय परिवार प्रेम के अभाव के कारण एक ही मकान में रहकर एक-दूसरे से कटे हुए, निराश एवं यंत्रणा को झेल रहे हैं। विघटित हो रहे परिवार को पुनः बसाने के लिए प्रेम की कोमलतम भावना का विकास होना आज अत्यंत जरूरी हो गया है।

5.7 विवाह की समस्या -

प्राचीन काल से समाज में विवाह की परंपरा चली आयी है। विवाह के संदर्भ में विभिन्न प्रदेशों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचार अलग-अलग हैं। स्त्री-पुरुष विवाह संस्कार द्वारा ही पारिवारिक जीवन में वैध रूप से प्रवेश करते हैं। भारतीय समाज एवं धर्म व्यवस्था में प्रमुख सोलह संस्कारों में एक पवित्र संस्कार विवाह है। विवाह भावनिक तथा नैतिक संस्कार होने के साथ-साथ पति-पत्नी को स्वीकृति देनेवाली समाज मान्य व्यवस्था है। आज के भौतिक युग में विवाह का स्वरूप बदल रहा है, मगर आज भी यह संस्कार मजबूती के साथ संपन्न हो रहा है। आधुनिक भारत संक्रमण काल से गुजर रहा है। नए और पुराने विचारों के संघर्ष के कारण वैवाहिक जीवन में असंगतियाँ आ रही हैं। आधुनिकता के नाम पर समाज की संस्कृतियाँ, परंपराएँ टूट रही

हैं। विवाह संस्था से आज विश्वास कम रहा है। लोग विवाह को एक निरर्थक बंधन मान रहे हैं। वैवाहिक असंगतियों के कारण अनेक दांपत्य तलाक ले रहे हैं। तलाक की वजह से अनेक नई-नई समस्याएँ समाज के सामने उत्पन्न हो रही हैं। आलोच्य उपन्यासकारों ने इस पर प्रकाश डाला है, उस पर यहाँ सोचेंगे -

5.7.1 विवाह निरर्थक बंधन -

व्यक्तिवाद की भावना, पश्चिमी सभ्यता एवं आधुनिक शिक्षा ने विवाह संस्था की जड़े हिला दी हैं। आज समाज में विवाह के प्रति उपेक्षा दिखाई देती है। विवाह को स्वतंत्र जीवन के लिए बाध समझा जा रहा है। आज मध्यवर्ग में स्त्री-पुरुष अपने भविष्य के प्रति अत्यंत सचेत हैं। विवाह के स्वरूप पर यह वर्ग अत्यंत भावुक एवं सचेत है, परंतु महानगरों में स्थित इस वर्ग की अपनी अलग पहचान रही है। आज मध्यवर्ग की स्त्री तो विवाह को एक निरर्थक बंधन मानती है। वह विवाह से ज्यादा पुरुषों से मित्र बनकर रहना पसंद करती है। 'शह और मात' उपन्यास में सुजाता विवाह को एक निरर्थक बंधन मानती है। वह विवाह से ज्यादा अपने भविष्य तथा अपने लक्ष्य को महत्त्व देती है। सुजाता की माँ 'अक्का' उसे शादी करने को कहती है, तब सुजाता बताती है- ''इतनी बड़ी तो हो गई। अब भी अक्का का यह नियंत्रण कभी-कभी झुँझलाहट पैदा कर देता है। एक तरफ तो दिनरात मेरी जान खाती है कि अब शादी कर ले, घर बसा ले। फिर कौन करेगा तेरी शादी ?''[39] स्पष्ट है सुजाता शादी जल्दी नहीं करना चाहती है। वह खुद को स्वतंत्र रखना चाहती है। वह पहले स्वयं कुछ बनना चाहती है। आज मध्यवर्गीय युवतियों की विवाह संबंधि इन धारणाओं पर आधुनिकीकरण तथा पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव दिखाई देता है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में नीलिमा और हरबंस पति-पत्नी तो हैं लेकिन दोनों में न सामंजस्य है, न प्रेम, न विश्वास, न सौदाहार्य। उनका दांपत्य जीवन अपने ही अहं एवं सपनों के कारण दब गया है। दोनों में एक-दूसरे के प्रति न सम्मान की भावना है न आदर की। वह पति-पत्नी के रूप में नहीं तो एक-दूसरे के दुश्मन के रूप में हमारे सामने आते हैं। विवाह उनके जिंदगी में कोई मायने नहीं रखता है। उसे सिर्फ एक बंधन के रूप में निभाते हैं। वस्तुतः दोनों का प्रेम-विवाह है लेकिन विवाह के पूर्व जो प्रेम तथा विश्वास था वह विवाह के बाद अविश्वास एवं कटुता में बदल जाता है। दोनों एक-दूसरे को प्रताड़ित एवं अपमानित करते हैं। विवाह को एक निरर्थक

बंधन मानते हैं, जिसमें से बाहर निकलने और अलग होने के लिए दोनों छटपटाते हैं लेकिन अलग नहीं हो जाते हैं। रोज-रोज के झगड़े से तंग आकर नीलिमा अलग रहना चाहती है। वह कहती है- "अगर वह सचमुच यह चाहता है कि मैं उससे अलग हो जाऊँ, तो मैं भी उसे अब ज्यादा परेशान नहीं करूँगी। जितने दिन कट गए हैं, उतने ही बहुत हैं, मैं अकेली रहकर भी किसी तरह जिंदगी काट ही लूँगी।"[40] स्पष्ट है दोनों के लिए विवाह एक मजबूरी बन गई है। वह दोनों मजबूर होकर एक साथ दिन काट रहे हैं। आज समाज में विवाह एक खेल बन गया है। लोग विवाह करते हैं उसे तोड़ देते हैं, फिर दूसरा विवाह कर लेते हैं। सुरजीत ने भी तीन विवाह किए हैं। एक पत्नी पिता के पास, दूसरी जालंधर में है और अब वह शुक्ला के साथ विवाह करके दिल्ली में है। अतः विवाह संस्था से उठ रहा विश्वास पूरे समाज के लिए घातक सिद्‌ध हो रहा है, पूरा समाज विघटन के दौर से गुजर रहा है। नारी शोषण का यह एक आयाम है।

निर्मल वर्मा के 'वे दिन' उपन्यास में स्त्री-पुरुष विवाह संस्था का निषेध करते हुए उन्मुक्त जीवन जीते हैं। वे विवाह के बिना एक-दूसरे के साथ संबंध रखते हैं। जिन्होने विवाह किया है वह अपना जीवन उबाऊपन में जीना नहीं चाहते हैं और अन्य व्यक्तियों से संबंध रखते हैं। रायना का विवाह जाक के साथ हुआ है लेकिन वह जाक के बंधनों में रहना नहीं चाहती है। वह देश-विदेशों में भटकती है। रायना हर समय नया शहर और नये शहर में नया पुरुष ढूँढ़ती है और उसके साथ यौन-संबंध स्थापित करती है। उसका जीवन एक भटकन बन जाता है, कभी न खत्म होनेवाली भटकन। वह विवाह को अपने अस्तित्व एवं व्यक्ति स्वातंत्र्य में बाधा मानती है और उसे तोड़ देती है। उन्मुक्त जीवन, उन्मुक्त भोग को रायना स्वीकार कर लेती है। मारिया और फ्रान्ज दोनों एक-साथ रहते हैं। शादी से पूर्व यौन-संबंध रखते हैं। दोनों विवाह को निरर्थक मानते हैं। इसी वजह से फ्रान्ज जब युरोप जाने लगता है तब वीसा के लिए मारिया को उसके साथ विवाह करना पड़ेगा जिसे मारिया अस्वीकार करती है। फ्रान्ज मारिया के संबंध में इंदी से कहता है- "तुम सोचते हो, वह वीसा के लिए तुझसे विवाह करेगी ?"[41] इससे स्पष्ट होता है कि दोनों विवाह के बंधन तथा प्रेम पर विश्वास नहीं करते हैं। अतः निर्मल वर्मा ने विवाह के बंधन को अस्वीकार करनेवाले पात्र किस तरह एक अपूर्ण एवं असुरक्षित जीवन जीते हैं इसका यथार्थ चित्रण किया है।

'आपका बंटी' उपन्यास में अजय और शकुन दोनों पति-पत्नी हैं लेकिन विवाह उनके लिए समस्या बना हुआ है। विवाह दोनों के लिए एक निरर्थक बंधन बन गया है क्योंकि दोनों में न प्रेम है, न विश्वास, न सामंजस्य। शकुन अपने विवाह के संदर्भ में कहती है- "सारी जिंदगी तनाव में काटने की अपेक्षा मुक्त होना लाख गुणा अच्छा था।"[42] स्पष्ट है अजय और शकुन दोनों एक-दूसरे को पराजित करने तथा पीड़ा देने के कार्य में रहते हैं। शकुन तो अजय को पराजित करने के चक्कर में खुद निराश एवं दुःखी रहती है। दोनों एक-दूसरे को दोष देते रहते हैं। शकुन और अजय आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक-दूसरे से मुक्त हो जाते हैं। इन दोनों के अनबन में उनका बेटा बंटी पीसता जाता है। उसका व्यक्तित्व खंडित बन जाता है। आज के मध्यवर्गों में विवाह की जो धारणाएँ हैं वह मन्नू भंडारी ने अजय और शकुन के माध्यम से हमारे सामने रखी हैं, जो चिंता का कारण बनती हैं।

5.7.2 विवाह-विच्छेद या तलाक की समस्या -

विवाह-विच्छेद या तलाक आज के युग की प्रमुख समस्या बन गई है। आज महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय परिवारों में तो इस समस्या ने तीव्र रूप धारण कर लिया है। दिल्ली, बंबई, कलकत्ता आदि शहरों में हररोज अनेक परिवार बिखर रहे हैं। दांपत्य जीवन में निर्धारित जहाँ नारी की कर्तव्य सीमा को निधारित किया गया है वहाँ पुरुष को भी एक पत्नीव्रत और आदर्श गृहस्थ बनने का निर्देश दिया है। दांपत्य जीवन सुचारू रूप से चलने के लिए पति-पत्नी में सहयोग और स्नेह की आवश्यकता है, जिसकी आज कमी रही है। परिणाम स्वरूप दांपत्य विघटित हो रहे हैं। दांपत्य जीवन के विघटन तथा तलाक का प्रमुख कारण है- पुरुष की अधिकार की भावना और नारी का अहंभाव। आलोच्य उपन्यासों में इस पर प्रकाश डाला है।

'शह और मात' उपन्यास में तलाक एवं परिवार विघटन पुरुष के झूठे अहं के कारण होता है। अपर्णा का पति युवराज है। उसको आखेट में रुचि है। उसके पास रानिवास है लेकिन यह सब झूठा अहं दिखाने के लिए है, क्योंकि वह नपुसक है। यह राज जानने पर वह अपर्णा पर अत्याचार करता है। अपर्णा उसे छोड़कर अपने भाईयों के पास रहती है। सुजाता का यह कथन उनके संबंधों को स्पष्ट करता है- "मैने आपसे कहा था कि अपर्णा ने अपने पति से अलग रहने की

अर्जी दी हुई है।''[43] स्पष्ट है अपर्णा अपने पति के झूठे अहं के कारण तथा खुद के अस्तित्व के लिए पति से अलग हो जाती है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में तलाक कोई नहीं लेता है लेकिन हरबंस और नीलिमा का दांपत्य जीवन तलाक तक पहुँचा है। नीलिमा और हरबंस में अनबन है। उन दोनों में सामंजस्य, सहयोग, विश्वास, प्रेम का अभाव है। नीलिमा मधुसुदन से कहती है- ''हम लोगों की भलाई अब इसी में है कि हम एक-दूसरे से अलग रहें। अगर वह कानूनी तौर पर संबंध-विच्छेद करना चाहे तो उसके लिए मेरी तरफ से कोई रूकावट नहीं होगी।''[44] अतः दोनों अपने दांपत्य जीवन से छुटकारा पाना चाहते हैं। अपने अहं के कारण ही दोनों का दांपत्य जीवन दुःखपूर्ण बन गया है। इतना सबकुछ होकर भी दोनों एक साथ जीवन बीताने के लिए अभिशप्त हैं। उन दोनों का तलाक न होना उसके पीछे मोहन राकेश की जीवन के प्रति अस्थावादी दृष्टि हमें देखने को मिलती है।

'वे दिन' उपन्यास में तलाक का कोई संकेत नहीं मिलता लेकिन रायना और जाक दोनों विवाहित होकर भी अलग-अलग रहते हैं। कथानायक जब रायना को जाक के संदर्भ में पूछता है तो वह कहती है- ''हम लोग अलग हो गए हैं। उसे शायद यह भी नहीं मालूम कि मैं मीता के संग प्राग आयी हूँ।''[45] रायना का यह कथन उन दोनों के संबंधों को स्पष्ट करता है। रायना जाक का साथ इसलिए छोड़ देती है कि घर भी उसे शरणार्थियों शिवीर जैसा लगता है। घर के इस घुटन से छुटकारा पाने के लिए जाक को छोड़ देती है लेकिन इसके बदले में उसे मिलती है- जिंदगी भर की भटकन। उसमें प्रेम और मानवीय संवेदना खत्म हो जाती है। वह अकेलेपन की पीड़ा झेलते हुए परिवेश से कटी हुई दिखाई देती है।

'आपका बंटी' में भी अजय की अधिकार की भावना तथा शकुन के अहं के कारण दोनों में तलाक हो जाता है। शकुन और अजय की यह समस्या स्वार्जित है। पति-पत्नी में जो सहयोग एवं सामंजस्य की भावना होनी चाहिए थी वह इन दोनों में नहीं है। दोनों अपने अहं को पोषित करने के लिए दांपत्य जीवन का त्याग कर देते हैं। दोनों एक-दूसरे को झुकाने का, पराजित करने का, पीड़ा देने का कार्य करते हैं। शकुन जो भी कार्य करती है वह अजय को नीचा दिखाने के लिए। जैसे- ''सात वर्षों में विभागाध्यक्ष से प्रिंसिपल हो जाने के पीछे भी कहीं अपने को बढ़ाने से

ज्यादा अजय को गिराने की आकांक्षा ही थी।''[46] अजय को पराजित करने के लिए शकुन को जीवन जीना पड़ा, वह उसके लिए शाप बन जाता है। उसमें अकेलापन, घुटन, संत्रास एवं रीक्तता की भावना भर देता है। अजय भी शकुन के सामने झुकता नहीं है। वकील चाचा, फूफी दोनों को समझाते हैं लेकिन उसका इन पर असर नहीं होता है। दोनों तलाक लेकर अलग हो जाते हैं। शकुन और अजय पुनर्विवाह कर लेते हैं लेकिन उनका पुत्र बंटी इन दोनों के अहं में पीसता हुआ उपेक्षित रहता है जो आगे एक समस्या बालक बन जाता है। मन्नू भंडारी बंटी के इस स्थिति के संदर्भ में कहती हैं - ''शकुन और अजय आपसी तनाव की असहनीयता से मुक्त होने के लिए एक-दूसरे से मुक्त हो जाते हैं, लेकिन बंटी क्या करे ? वह तो समान रूप से दोनों से जुड़ा है, यानी खंडित-निष्ठा उसकी नियति है।''[47] तलाक के कारण निर्मित बंटी की समस्या आज महानगरों में अनेक परिवारों में दिखाई देती है। आज समाज में हजारों की संख्या में बंटी जैसे समस्या से पीड़ित बालक दिखाई देते हैं। इन बच्चों की नींव ही इतनी कमजोर बनेगी तो आगे आनेवाले समय में समाज के अमन एवं विकास में बाधा निर्माण होगी ऐसा लगता है। नई पीढ़ी की मानसिकता बदलेगी, यही संकेत दिया है।

अतः विवाह जैसे पवित्र बंधन को आज नकारा जा रहा है। मध्यवर्गीय परिवार उसे निरर्थक एवं एक ढकोसला मान रहे हैं। दांपत्य जीवन में सहयोग के अभाव से तलाक की समस्या गंभीर रूप ले रही है। तलाक के कारण पति-पत्नी दोनों अलग हो जाते हैं। वे तो पुनर्विवाह करते हैं या अकेले रहते हैं लेकिन अलग होने पर उनमें एक भटकन पैदा हो जाती है। वे नैतिकता खो देते हैं। उनमें अलगाव, अकेलापन, घुटन, संत्रास की भावना बढ़ जाती है। इसी वजह से समाज में आज अनेक परिवार विक्षिप्त मानसिकता में जीवन बिताते दिखाई देते हैं। तलाक केवल उनके जीवन पर ही प्रभाव डालता नहीं है, आनेवाली पीढ़ी की मानसिकता को भी बरबाद कर देता है।

5.8 नारी जीवन की समस्या -

मानव समाज गतिशील है। उसमें समय-समय पर परिवर्तन होता रहता है। नारी का जीवन विविध समस्याओं से भरा हुआ है। भारतीय समाज व्यवस्था का अभिन्न अंग नारी है। नारी के विविध रूपों की पूजा करनेवाली भारतीय संस्कृति है। लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा, आदिशक्ति, भवानी जैसे रूप आज भी प्रेरणा स्रोत हैं, मगर पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था ने नारी को

अबला ही बनाया है। इसके पीछे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक मान्यताएँ रही हैं परंतु आज भौतिक विकास, शिक्षा प्रसार, समानता का तत्त्व, आरक्षण आदि के कारण इसमें परिवर्तन हो रहा है। नारी जीवन में बदलाव आ रहा है, जो परिवर्तित नारी के रूप को दर्शाता है। आजादी के नाम पर होनेवाला स्वैराचार भी खतरा बन रहा है, ऐसा लगता है। इस पर साहित्यकारों ने प्रकाश डाला है। आधुनिक नारी के विभिन्न रूप इसके प्रमाण हैं।

आदिकाल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल में नारी को समाज व्यवस्था एवं पुरुषों के शोषण का शिकार होना पड़ा है। नारी के अधिकारों का दमन होता आ रहा है। आज नारी अपने शोषण एवं अत्याचार का विरोध कर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। आज का युग नारी चेतना का युग है। फिर भी आज के समय में नारी के सामने अनेक नई समस्याएँ हैं, परिवेश बदलता गया, नारियों की समस्याएँ बदल गई लेकिन पूरे अधिकार उन्हें आज भी नहीं मिले हैं। आज नारी शिक्षित एवं आर्थिक दृष्टि से सक्षम होकर भी तनाव एवं घुटन में जीवन जीने के लिए विवश है। आज भी उन्हें अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ता है। नारी का शोषण आज भी हो रहा है।

5.8.1 स्वतंत्र अस्तित्व की समस्या -

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने नारी को अपने अधिकारों के प्रति सजग किया है। आज नारी में व्यक्तिवादी भावना बढ़ गई है। वह अपनी आजादी किसी भी बाधा को स्वीकार नहीं करती है। अपने अस्तित्व को खतरा उत्पन्न होने पर वह सभी रिश्ते-मर्यादाओं को तोड़ देती है। 'शह और मात' उपन्यास की नायिका सुजाता समाज के बंधन और नियमों को तोड़ना चाहती है। नम्रता और शालीनता का होना नारी के लिए आवश्यक माना है। सुजाता को उदय द्वारा अपमानित एवं उपेक्षित करने पर उसका अहं दुःखी हो जाता है। वह सोचती है- ''और मेरे मन में उस क्षण बड़ी विकट कसमसाहट हुई कि चाहे एक बार शालीनता और नैतिकता की सारी हदें तोड़ देनी पड़े लेकिन इस व्यक्ति को ऊँगलियों पर नचा डालूँ।''[48] आज मध्यवर्गीय युवती अपने आपको बंधनों में नहीं जकड़ना चाहती वह समाज के सभी रूढ़ियों-परंपराओं का विरोध करना चाहती है, इसका मूल कारण है- उनमें बढ़ा व्यक्तिवादी दृष्टिकोण। अपर्णा भी अपना स्वातंत्र्य तथा अस्तित्व खतरे में देखकर अपने पति को छोड़कर शहर चली आती है।

'अंधेरे बंद कमरे' में आधुनिक नारी का चित्रण नीलिमा और सुषमा के माध्यम से किया है। आज समाज में मध्यवर्गीय नारी में आ रही आधुनिकता, अपने स्वातंत्र्य, अस्तित्व एवं व्यक्तित्व के प्रति सजगता का चित्रण इस उपन्यास में है। नीलिमा एक मध्यवर्गीय परिवार की नारी है, उसकी अपनी अपेक्षाएँ, रुचियाँ हैं। वह अपनी आजादी, व्यक्तित्व एवं अस्तित्व के प्रति सजग है। वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किसी की रूकावट बरदाश्त नहीं करती, इसके लिए वह परिवार एवं दांपत्य जीवन का त्याग करने के लिए भी तैयार है। वह नृत्य का प्रशिक्षण लेती है, विदेश जाती है, शराब-सिगारेट पीती है। उसका स्वभाव निड़र है। वह अपने पति हरबंस के अहं के आगे भी झुकती नहीं है और उसके अत्याचारों को सहती है। दोनों के अहं के कारण उनका दांपत्य जीवन घूटन, रीक्तता और दुःख से भर जाता है। इसके बावजूद भी नीलिमा अपने अस्तित्व के लिए लड़ती है। वह कहती है- ''मैं मरने से पहले खूब नाम कमाना चाहती हूँ।''[49] स्पष्ट है नीलिमा अपने जीवन में दौलत और शौहरत कमाने की लालसा रखती है जिसके लिए वह न घर का विचार करती है न अपने बेटे अरुण का। सभी रूढ़ियों तथा परंपराओं का विरोध करती है लेकिन अंत में टूट जाती है। नीलिमा की तरह सुषमा भी आधुनिक नारी है। वह आर्थिक दृष्टि से सक्षम तथा शिक्षित होकर भी अपने अस्तित्व के लिए लड़ती है और अंत में टूटी हुई दिखाई देती है।

'वे दिन' उपन्यास की रायना भी अपने व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के लिए घर एवं जाक का साथ छोड़ देती है लेकिन इस स्वातंत्रता की लालसा ने उसमें एक भटकन पैदा होती है। अकेलेपन, अलगाव, घुटन, संत्रास की भावना उस पर छा जाती है।

'आपका बंटी' उपन्यास की नायिका शकुन मध्यवर्गीय शिक्षित नारी है। उसका पति अजय उसे हर वक्त प्रताड़ित करता है लेकिन शकुन उसके आगे झुकती नहीं। वह अपने निर्णय खुद लेती है। अब अजय पुनर्विवाह करता है तब शकुन भी डॉ. जोशी से शादी करती है। शकुन सोचती है- ''अजय को उसे दिखा ही देना है कि अगर वह नई जिंदगी शुरू कर सकता है तो वह भी कर सकती है।''[50] शकुन को अपने व्यक्तित्व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करना पड़ता है। सभी संघर्षों का सामना करके वह खुद को आत्मनिर्भर बनाकर अपना अलग अस्तित्व स्थापित करती है। मन्नू भंडारी 'आपका बंटी' उपन्यास की भूमिका में लिखती हैं- ''शकुन चक्की पीस-पीसकर बेटे का जीवन बनाने में अपने आपको स्वाहा कर देनेवाली माँ नहीं थी; बल्कि स्वतंत्र

व्यक्तित्व, आकांक्षाएँ और आजीविका के साधनों से दृप्त माँ थी।''[51] पुरुष प्रधान भारतीय समाज में दोहरे माणदंड हैं नारी के लिए जो नियम हैं वह पुरुष के लिए नहीं हैं। नारी के लिए जो अनैतिक है वह पुरुष के लिए नहीं लेकिन शकुन इन सभी माणदंडों का अस्वीकार करती है तथा अपनी अलग पहचान बनाने के लिए जूझती है। यहाँ आधुनिक शिक्षित नारी के दर्शन होते हैं।

5.8.2 नारी अत्याचार एवं शोषण की समस्या -

पुरुषप्रधान भारतीय व्यवस्था में नारी पर अत्याचार शुरू से ही होते आ रहे हैं। आज नारियाँ आत्मनिर्भर, आर्थिक दृष्टि से सक्षम एवं शिक्षत होकर भी उनका शोषण समाज कर रहा है। आज भी उनका मानसिक एवं शारीरिक रूप से शोषण हो रहा है। चाहे वह उच्चवर्ग, मध्यवर्ग या निम्नवर्ग की क्यों न हो। 'शह और मात' की अपर्णा अपने पति के अत्याचारों का शिकार होती है। वह अपने झूठे अहं के कारण उसे कोड़ों से पीटता है। सुजाता, मंदा आदि नारियाँ भी समाज व्यवस्था का शिकार होती हैं। 'अधेरे बंद कमरे' उपन्यास में मोहन राकेश ने मध्यवर्गीय नारी की विवशता एवं उस पर होनेवाले अत्याचार को चित्रित किया है। आज मध्यवर्गीय नारी अपने स्वातंत्र्य एवं अस्तित्व के लिए लड़ रही है। समाज की जर्जर रूढ़ि-परंपराओं का विरोध कर के उसे तोड़ रही है लेकिन यह सब करते हुए उसे परिवार एवं समाज के अत्याचार का बली होना पड़ रहा है। नीलिमा पर हरबंस अत्याचार करता है, उसे पीटता है। खुद से अलग कर देता है। मानसिक रूप से पीड़ा देता है। नीलिमा उसके अत्याचारों से तंग आकर कहती है- ''तुम एक मुंसिफ हो और मैं एक मुजरिम हूँ, जिसे तुम हरवक्त अपने सामने कठघरे में खड़ी रखते हो।''[52] स्पष्ट है नीलिमा का शोषण हरबंस तो करता है लेकिन अपने काम निकलवाने के लिए एक वस्तु की तरह उसका इस्तमाल करता है। 'वे दिन' की रायना भी स्थितियों की शिकार है। मानसिक संत्रास के कारण वह अपने पति जाक के साथ नहीं रहती है। 'आपका बंटी' की शकुन पति अजय के अहं का शिकार है। उसके अत्याचार के कारण उसे एक मानसिक पीड़ा एवं अस्थिरता में अपनी जिंदगी बीतानी पड़ती है।

अतः आज मध्यवर्गीय नारी अपने 'स्व' और व्यक्तिगत स्वातंत्र्य को लेकर सचेत दिखाई देती है। आज की नारियाँ शादी-ब्याह, परिवार से अपने 'करियर' को महत्त्व देती हैं। नारी शिक्षित तथा आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होकर भी उसका शोषण हो रहा है। 'शह और

मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन' और 'आपका बंटी' में नारी अस्तित्व एवं शोषण की समस्या को यथार्थ रूप में चित्रित किया है।

5.9 अनैतिक संबंधों की समस्या -

जो स्त्री-पुरुष समाज के मान्यता के बिना यौन संबंध स्थापित करते हैं उन संबंधों को अनैतिक कहा जाता है। इन संबंधों में न मर्यादा, न संस्कृति, न समाज, न परिवार, न रिश्तों का पालन किया जाता है। यह संबंध समाज का विरोध होने पर, धनिकों द्वारा दुर्बल नारी को भोगने की प्रवृत्ति, काम वासना की पूर्ति के लिए रखैल रखने की प्रवृत्ति, कुंठित एवं दमित यौन भावना और विक्षिप्त मानसिकता आदि के कारण स्थापित होते हैं। आधुनिक युग में समाज में अनैतिक संबंधों ने एक गंभीर समस्या का रूप धारण किया है। आज देह की प्यास बुझाने एवं यौन लिप्सा के कारण स्त्री-पुरुष शारीरिक संबंध रखते हैं। अनैतिक संबंधों के कारण आज अनेक हत्याएँ हो रही हैं। अनेक युवतियों का जीवन बरबाद हो रहा है। डॉ. महेंद्र भाटनागर इस संदर्भ में लिखते हैं- 'हिंदू समाज की वैवाहिक समस्या के पीछे आर्थिक अभाव नहीं वरना गिरी हुई नैतिकता है।''[53] अनैतिक संबंधों के कारण परिवार टूट रहे हैं।

'शह और मात' उपन्यास में राजेंद्र यादव ने विवाहपूर्व या विवाह के बाद रखे अनैतिक संबंधों के क्या परिणाम होते हैं इसका चित्रण किया है। सुजाता के कॉलेज की लड़की मंदा और कवि में अनैतिक संबंध हैं। कवि विवाहित था फिर भी मंदा उनके साथ संबंध बढ़ाती है जिसका बाद में उसे पछतावा करना पड़ता है। उनके संबंधों में रेखा कहती है- ''मौत और मुहब्बत का रोना रोनेवाले कविजी उसे नया जीवन देने पहुँच गए। दुनिया भर की जलालत और बदनामी उठानी पड़ी।''[54] स्पष्ट है दिशाहीन पीढ़ी को गलत कदम न उठाने का संदेश भी दिया है। सुजाता के कॉलेज के अध्यापक और अध्यापिका के अनैतिक संबंधों का भी चित्रण इस उपन्यास में मिलता है। साथ-साथ अपर्णा के पति और पिता के हरम में अनेक रानी और रखेले थी जिनके साथ उनका अनैतिक संबंध था। अतः अनैतिक संबंधों की भयावहता और भटकती युवा पीढ़ी की ओर राजेंद्र यादव ने इस समस्या के द्वारा संकेत किया है।

'अंधेरे बंद कमरे' में अनैतिक संबंधों की समस्या को उठाया है। खुरशीद एक युवती है जो अनैतिक संबंध की वजह से अपने बूढ़े बाप को छोड़कर भाग जाती है। सुरजीत

जिसकी पहले दो-दो शादियाँ हो चुकी हैं, फिर भी वह शुक्ला से अनैतिक संबंध रखता है। परिणामस्वरूप शुक्ला शादी से पहले गर्भवती हो जाती है और मजबूर होकर उसके साथ विवाह करना पड़ता है। हरबंस इस संबंध में कहता है- ''वह उसे इस हद तक ले जा चुका था कि उसके लिए, मेरा मतलब है वह समझती थी कि उसके लिए और कोई रास्ता नहीं है।''[55] सुषमा और मधुसूदन भी शादी से पहले शारीरिक संबंध रखते हैं। निर्मल वर्मा के उपन्यास 'वे दिन' में पुरुष नैतिकता और अनैतिकता का बिना विचार किए एक-दूसरे को भोगते हैं। रायना शादी शुदा होकर भी अन्य पुरुषों से संबंध रखती है जिसमें वह नैतिकता-अनैतिकता का प्रश्न नहीं लगती सिर्फ अपने शरीर की प्यास बुझाती है। कथानायक के मित्र तथा अन्य होस्टल के छात्र अनेक युवतियों से शारीरिक संबंध रखते हैं। 'आपका बंटी' उपन्यास में अनैतिक संबंधों की समस्या ज्यादा रूप नहीं दिखाई देती। शकुन डॉ. जोशी के साथ संबंध रखती है और बाद में विवाह करती है।

विवेच्य उपन्यासकारों ने आज के स्त्री-पुरुषों में बढ़ती भोग लिप्सा की समस्या को रेखांकित किया है। उन्होंने अनैतिक संबंधों के परिणामों की ओर भी संकेत किया है, जो भविषय के लिए चेतावनी है।

5.10 यौन संबंध की समस्या -

मानवी जीवन में कामभावना का बहुत अधिक प्रभाव है। फ्रायड के अनुसार अचेतन मन की सबसे प्रबल वासना है। डॉ. शैल रस्तोगी यौन संबंध के संदर्भ में लिखती हैं- ''काम शब्द का प्रयोग प्रायः स्त्री और पुरुष के पारस्परिक आकर्षण संबंधी रसपूर्ण व्यवहारों के प्रति किया जाता है।''[56] आज समाज में यौन सुख के प्रति अतृप्ती एवं यौन तीव्रता ने गंभीर रूप ले लिया है। यौन लिप्सा की शांति के लिए या देह की प्यास बुझाने के लिए रिश्ते-मर्यादाएँ मिट रही हैं। यौन समस्या ने गंभीर रूप धारण किया है।

'शह और मात' उपन्यास में यौन जीजिविषा की समस्या का स्पष्ट संकेत नहीं मिलता। 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में अरविंद, मधुसूदन, ऊबानू, हरबंस, नीलिमा, सुषमा आदि पात्र यौन जीजिविषा से पीड़ित हैं। अरविंद के ठाकुराइन के संबंधी विचार कामुकता से भरे हुए हैं। हरबंस भी हमें यौन भावना से पीड़ित लगता है। नीलिमा उसकी पत्नी तो है लेकिन वह उसके प्रति प्रेमभाव रखती है, न विश्वास। सिर्फ देह की प्यास बुझाने के लिए वह उसके पास जाता है। हरबंस

में यौन-लालसा अहम है, वह खुद को अपूर्ण महसूस करता है। नीलिमा में भी अतृप्त यौन भावना दिखाई देती है। वह कहती है- ''मैं जीवन में अब अपने छोटे से सुख के अलावा और कुछ नहीं चाहती, कुछ नहीं, बिल्कुल कुछ नहीं...।''[57] स्पष्ट है नीलिमा इस भूख के कारण ही 'ऊबानू' के प्रति आकर्षित हो जाती है। ऊबानू की पत्नी मर गई है। उसकी आँखों से तो भूख टपकती दिखाई देती है। मधुसूदन भी ठकुराईन के प्रति कामुकता का अनुभव करता है। सुषमा में भी अदम्य यौन जीजिविषा है। वह खुद को आत्मनिर्भर तो बनाती है लेकिन शरीर की भूख उसकी कमजोरी है। इसी भूख को मिटाने के लिए मधुसूदन से शादी से पहले वह शारीरिक संबंध रखती है। अतः 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में शहरों में बढ़ती कामवासना के शिकार व्यक्तियों का चित्रण मिलता है।

'वे दिन' उपन्यास में सेक्स और देह की प्यास के लिए मुक्त भोग होते होते हुए दिखाई देते हैं। निर्मल वर्मा के कथासाहित्य की आधुनिक नारियाँ खुद पुरुषों के पास सेक्स की तृप्ति के लिए जाती हैं। वे अपने काम की तृप्ति करवाती हैं। 'वे दिन' में भी रायना पति 'जाक' द्वारा परित्यक्त्या नारी है। इस उपन्यास में अतृप्त पत्नी की व्यथा और उसकी अदम्य यौन लालसाएँ किस प्रकार उसमें यौन विकृतियों को जन्म देती है इसका रायना के द्वारा चित्रण किया है। रायना का यह कथन- ''मैं ज्यादा दिन अकेली नहीं रह सकती....।''[58] उसके अतृप्त शरीर की प्यास को स्पष्ट करता है। यह भूख भटकने के लिए मजबूर करती है। आज तक पुरुष स्त्री को भोग रहा था यहाँ एक स्त्री पुरुष को भोगती है। रायना अपने अकेलेपन की पीड़ा को दूर करने के लिए शहर-दर-शहर बदलती है और उसके साथ पुरुष-दर-पुरुष बदलती है। वह प्रेम को शरीर की अनिवार्यता के रूप में लेती है। किसी अन्य पुरुष से संबंध स्थापित करने पर न उसे पछतावा होता है न उसमें वह लज्जा, प्रेम, नैतिकता- अनैतिकता एवं आचार-विचार को लाती है। निस्संग होकर वह अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है। उसकी इस यौन लिप्सा ने उसमें एक भटकन पैदा की है। उसे अस्थिर बना दिया है। अपनी यौन भावना के सामने वह सभी मूल्यों को बहा देती है।

'आपका बंटी' उपन्यास में भी शकुन में इस प्रकार की अदम्य लालसा दिखाई देती है। अजय और शकुन का वैवाहिक जीवन असफल हो गया है। शकुन अपने पति अजय द्वारा तिरस्कृत एवं अतृप्त नारी है। इसी कारण वह अजय से तलाक लेने के उपरांत डॉ. जोशी के प्रति आकर्षित हो जाती है। उसमें निर्माण हो रहे शरीर की भूख के संदर्भ में वह कहती है- ''लगता है,

उम्र बीत जाने से कौशर्य और यौवन नहीं बीत जाता। ये भावनाएँ तो केवल तृप्त होकर ही मरती हैं, वरना और अधिक बलवती होकर आदमी को मारती रहती हैं।''[59] स्पष्ट है अपनी यौन सुख प्राप्ति के लिए शकुन डॉ. जोशी से विवाह करती है, जिसमें बंटी का भविष्य तबाह हो जाता है।

कहना गलत नहीं होगा कि विवेच्य कृतियों में मध्यवर्गीय नारी की बदलती मानसिकता एवं यौन-जीजिविषा की विकृत संकल्पना की समस्या को चित्रित किया है। आज मध्यवर्ग नारी पूर्ण पुरुष के पीछे तथा उस सुख के पीछे दौड़ती है जिसके फलस्वरूप मध्यवर्गीय दांपत्य जीवन में अन्य व्यक्ति का आना दिखाई देता है। इसी के कारण दांपत्य जीवन टूट रहा है तथा मानसिक विकृति बढ़ रही है। यौन भूख के कारण आज आधुनिक युवक-युवतियाँ दिशाहीन हो रही हैं। इस भूख को मिटाने के लिए वह सांस्कृतिक मूल्यों को तोड़ रहे हैं, ऐसा दिखाई देता है।

5.11 अर्थाभाव की समस्या -

आधुनिक युग की सबसे बिकट समस्या अर्थ है। धन आज के समाज की धुरी बन गया है। हम देखते हैं कि आर्थिक विकास के आधार पर ही हर क्षेत्र का विकास निर्भर होता है। आज आर्थिक गतिरोध और जनसामान्य की दरिद्रता दिन-ब-दिन बढ़ रही है। आज के अर्थ युग का अभिशाप यह है कि अर्थ की शक्ति शारीरिक, मानसिक आदि शक्तियों से ध्येय मानने लगे हैं। अर्थ उनका देवता और निर्माता हो गया है। अर्थ ने समाज में विद्रुपता, कुंठा, अमानवीयता आदि प्रवृत्तियों का विकास होने में मदत की है।

'शह और मात' उपन्यास का नायक उदय भी आर्थिक स्थिति से कमजोर है। वह पैसे कमाने तथा लेखक बनने के लिए मेरठ से मुंबई आता है लेकिन उसके हाथ निराशा ही आती है। यहाँ उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसकी प्रेमिका रश्मि उसे उसके फटीचर हालत के कारण छोड़ देती है। उदय कई सपने सजाकर बंबई आता है। सुजाता उसकी आर्थिक हालात के संदर्भ में कहती है- ''उदय को ही लूँ, न तो वे देखने में ही सुंदर, प्रभावशाली न, सामाजिक दृष्टि से ऐसे प्रतिष्ठित... आर्थिक दृष्टि तो कहना ही क्या। एक उखड़ा हुआ हवा में उड़ता बीज जो अपने लायक धरती खोजने में खुद यहाँ से वहाँ भटक रहा हो...।''[60] इस अर्थाभाव के कारण उदय को उस प्रतिभा से समझोता करना पड़ता है। अर्थार्जन के लिए वह अपनी लिखी कहानियाँ दूसरों के नाम प्रकाशित करने के लिए तैयार हो जाता है। पैसों के लिए दूसरी भाषा के

ग्रंथ अनुदित करता है। अर्थाभाव के कारण छोटे से मकान में रहता है। अतः राजेंद्र यादव ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय लेखक की अर्थाभाव की स्थिति, उसकी ट्रेजडी, पराजय और उसके खंडित व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति दी है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में मधुसूदन, अरविंद, हरबंस, नीलिमा, कस्साबपुरा के लोग अर्थाभाव में जीवन गुजारते दिखाई देते हैं। आर्थिक दुरावस्था एवं बढ़ती महँगाई ने महानगरों में रहनेवाले मध्यवर्गीय परिवारों का जीवन जटिल बना है। मधुसूदन और अरविंद को अर्थाभाव में दिल्ली के अत्यंत गंदगी से भरी बस्ती में रहना पड़ता है। कस्साबपुरा के लोग तो दो वक्त की रोटी के लिए झगड़ते दिखाई देते हैं। मकान की समस्या के कारण एक ही घर में दस-दस लोग, एक ही कमरे में रहते हैं। मधुसूदन गाँव से शहर की ओर अपनी आर्थिक हालात सुधारने के लिए आता है। वह इसके लिए मुंबई-लखनऊ-दिल्ली आदि शहरों में घूमता है। छोटे-छोटे सपनों की पूर्ति के लिए उसे तरसना पड़ता है। हरबंस की आर्थिक हालत भी कोई खास नहीं है। वह जब लंदन में जाता है तब उसे अर्थाभाव के कारण क्लर्क की नौकरी करनी पड़ती है। वहाँ उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। मोहन राकेश ने अपनी लक्ष्य की पूर्ति के लिए विदेश जानेवाले भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों की स्थिति का चित्रण नीलिमा और हरबंस के माध्यम से किया है। लंदन में हरबंस सस्ते घर में रहता है। जैसे- ''यह जगह लंदन के लिहाज से काफी सस्ती होती हुई भी मेरी जेब के लिहाज से काफी महँगी है और बहुत संभव है कि मैं जल्दी ही यह जगह छोड़कर किसी और सस्ती-सी जगह पर चला जाऊँ।''[61] स्पष्ट है विदेश में जाकर हरबंस की आर्थिक दशा बिकट हो जाती है। दिल्ली में भी नीलिमा के खर्चिली स्वभाव से तंग आ जाता है। आर्थिक दुरावस्था के कारण अनेक जगहों पर उसे अपमान सहन करना पड़ता है।

'वे दिन' का इंदी विदेश में आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण छुट्टियों में नौकरी करता है। सिर्फ इंदी ही नहीं तो विदेश में पढ़ने के लिए आए सभी छात्र अर्थाभाव के कारण नौकरी की तलाश में रहते हैं। इंदी का यह कथन उसके आर्थिक अभाव को स्पष्ट करता है- ''उन दिनों स्कॉलरशिप की रकम बहुत पहले खत्म हो जाती थी। हर विद्यार्थी छुट्टियों में कोई-न-कोई काम ढूँढ़ लेता था। मैं अब तक टालता आया था। लेकिन मुझे लगा, अब ज्यादा दिनों तक इस

तरह नहीं चल सकेगा।''[62] स्पष्ट है उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उसे गेटकीपर तथा मारिया से कुछ क्राऊंस उधार भी लेने पड़ते हैं तो कभी-कभी भूखा भी सोना पड़ता है।

'आपका बंटी' उपन्यास के सभी पात्र मध्यवर्गीय हैं। शकुन प्रिंसिपल है, जोशी डॉक्टर है, अजय डिव्हिजनल मॅनेजर है, इसी कारण आर्थिक अभाव उनमें तीव्र रूप में नहीं दिखाई देता है। अजय की आर्थिक स्थिति थोड़ी-सी नाजुक है। वह कलकत्ते में छोटेसे मकान में रहता है। बंटी को होस्टल भेजते समय रुपयों की कमी लगती है।

अतः चारों उपन्यासों में आर्थिक अभाव के कारण पात्र संघर्षपूर्ण जीवन बिताते दिखाई देते हैं। आज आधुनिक जीवन में मध्यवर्ग को आर्थिक दुरावस्था के कारण सबसे अधिक संघर्ष करना पड़ता है। अहं के कारण यह वर्ग न अपनी इच्छाओं का त्याग कर सकता है, न उसे पूरा करने की क्षमता रखता है। परिणामतः सबसे अधिक घुटन तनाव एवं निराशा उस वर्ग में फैली है। अर्थाभाव के कारण वह असंतुष्टि से आक्रांत रहता है।

5.12 बेरोजगारी की समस्या -

बेरोजगारी की समस्या आधुनिक युग की समस्या है। उस समस्या का विकास आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं में क्रांतिकारी परिवर्तन और विश्वयुद्धों के परिणामस्वरूप हुआ है। बेरोजगारी के प्रमुख कारण नागरीकरण, दोषपूर्ण उद्योगों की स्थापना, अधूरा औद्योगिक विकास, प्रशिक्षण का अभाव, सीमित व्यापारिक सुविधाएँ, दोषपूर्ण मान्यताओं की कार्यप्रणाली, व्यवसायिक शिक्षा का अभाव, ग्रामों का पतन आदि हैं। बेरोजगारी के कारण युवक-युवतियाँ दिशाहीन हो रही हैं तथा अनैतिक कार्य कर रही हैं। आज महानगरों में बेरोजगारी के कारण लोग बुरे से बुरा एवं अवैध कार्य करने के लिए तैयार हैं। बेरोजगारी के संदर्भ में डॉ. पद्मा चामले लिखती हैं- ''बेरोजगारी से केवल व्यक्ति ही नहीं प्रभावित होता बल्कि परिवार, समाज तथा देश की सुरक्षा के लिए भी धोखा उत्पन्न होता है।''[63] आज यही हो रहा है बेरोजगारी के कारण युवक आतंकवादी एवं नक्सलवादी गुटों को सहयोग दे रहे हैं जिससे उनका तो नुकसान होता है लेकिन देश को बहुत बड़ा खतरा निर्माण होता है।

'शह और मात' उपन्यास में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या को उठाया है। आज अनेक युवक-युवतियाँ महानगरों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। यह महानगरों में तो जाते हैं लेकिन

वहाँ की बढ़ती बेरोजगारी, मकान की समस्या, महँगाई आदि के कारण उनके सपने ढह जाते हैं। शैक्षिक आर्हता एवं सक्षम होकर भी अनेक युवकों को काम नहीं मिल रहा है। परिणामस्वरूप युवक निराश तथा दिशाहीन हो रहे हैं। बड़े-बड़े गुनाह और अनैतिक कार्य करने के लिए मजबूर हो रहे हैं। 'शह और मात' उपन्यास का नायक उदय भी बेरोजगार है। बेरोजगारी के कारण उसकी हालत दयनीय हो गई है। वह अपनी बहन अपर्णा से कहता है- ''मजदूर आदमी हैं। आज कमाएँगे नहीं तो कल खाएँगे क्या ?''[64] उदय प्रतिभाशाली एवं सक्षम होकर भी कम वेतनवाली एवं निम्न ओहदे पर कार्य करना पड़ता है। जिसका कभी-कभी वेतन भी नहीं मिलता है। उदय रोजगार के लिए भटकता रहता है। उदय की व्यथा, पीड़ा एवं दशा आज के युवकों की दशा है।

'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में बंबई, दिल्ली, लखनऊ आदि महानगरों का चित्रण है। महानगरों में बढ़ती बेरोजगारी, अर्थाभाव, प्रदूषण, मकान, घटते मानवी मूल्य, बढ़ती आराजकता आदि समस्याओं का चित्रण इसमें किया है। उपन्यास में मधुसूदन, अरविंद, हरबंस, कस्साबपुरा के लोग बेरोजगारी की समस्या से पीड़ित हैं। मधुसूदन काम की तलाश में शहर-दर-शहर बदलता है। वह नौकरी के लिए लखनऊ, बंबई और दिल्ली में भटकता है लेकिन स्थायी नौकरी उसे नहीं मिलती है। बेरोजगारी के कारण वह निराश एवं दुःखी रहता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर बन गई है। ठाकुराइन मधुसूदन के संदर्भ में कहती है- ''अभी तो इन्हें तुम नौकरी की ही बात सोचने दो। नौकरी ही जाएगी, तो दुनिया-भर के तर माल भी अपने आप उड़ाने को मिल जाएँगे। अभी तुम इन्हें रूखे सूखे पर ही रहने दो।''[65] स्पष्ट है मधुसूदन एक होनहार पत्रकार होकर भी उसे भूखा रहना पड़ता है। दर-दर की ठोंकरे खानी पड़ती हैं। आज अर्थप्रधान युग के कारण सांस्कृतिक संस्थाओं, कलाकार तथा पत्रकार अपने वैयक्तिक स्वार्थों के लिए दिशा बदल रहे हैं। मधुसूदन एक कार्यक्षम पत्रकार होकर भी हीनतम कार्य करने के लिए तैयार हो जाता है। हरबंस भी नौकरी के लिए संघर्ष करता है। बेरोजगारी के कारण उसे अनेक छोटे-छोटे कार्य करने पड़ते हैं। ठाकुराइन तथा उसकी बेटी निम्मो काम न होने के कारण दूसरों के घरों में चौका बरतन करने जाती है। अतः मोहन राकेश ने दिल्ली तथा बंबई में बेरोजगारी की बढ़ती समस्या को यथार्थ रूप में इस उपन्यास में रेखांकित किया है। 'वे दिन' में बेरोजगारी की समस्या का संकेत

कथानायक तथा अन्य छात्रों के स्थिति से मिलता है। 'आपका बंटी' उपन्यास में बेरोजगारी की समस्या का चित्रण नहीं है।

अतः आज के युग में समाज एवं शासन व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी समस्या है वह बेरोजगारी की। बेरोजगारी की समस्या महानगरों में भयावह रूप धारण कर रही है, इसका चित्रण 'शह और मात' एवं 'अंधेरे बंद कमरे' में दिखाई देता है।

5.13 युद्ध की समस्या -

युद्ध संसार की शांति, आंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विचार स्वतंत्र, आदान-प्रदान और विभिन्न समाजों के बीच संचार व्यवस्था को नष्ट करता है। युद्ध केवल व्यक्तियों की नैतिक अवस्था को ही नहीं गिरा देता तो परिवारों का नाश कर देता है। आधुनिक हिंदी साहित्य में युद्ध की समस्या का चित्रण अपेक्षाकृत कम हुआ है। युद्ध पूरे विश्व की आर्थिक, सामाजिक एवं जीवीत हानि करता है। युद्ध में हुई आर्थिक तथा सामाजिक हानि को तो सुधारा जा सकता है लेकिन इसके कारण मानव के मन पर जो आघात होता है उसे किस तरह से मिटाया जाएगा ? उसमें भय, अजनबीपन, रिक्तता, अकेलापन, असुरक्षितता और अलगाव की भावना उस के जीवन को अभिशाप बना देती है। जैसे दूसरा महायुद्ध के परिणाम को जपान ने मिटा दिया है उसने अपने देश की आर्थिक, सामाजिक स्थिति को विकसित किया। नए-नए शहर बनवाए परंतु मानसिक रूप से जपान ठीक हुआ है ऐसा हम कह नहीं सकते।

द्वितीय विश्व महायुद्ध की पृष्ठभूमि के रूप में निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' उपन्यास की रचना की है। महायुद्ध की विभीषिकामयी स्थितियों ने मानवी जीवन की जटिल स्थिति को इसमें रेखांकित किया है। इस उपन्यास के संदर्भ में डॉ. बाबू जोसेफ लिखते हैं- " 'वे दिन' में निर्मल वर्मा ने युद्धोत्तर पीढ़ी की जटिल मानसिकता का चित्रण किया है।"[66] युद्धोत्तर पीढ़ी की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि युद्ध समाप्त होने के बाद भी युद्ध की भयावह झाँकी उनके भीतर गहराई से फैल चुकी है। फलस्वरूप इनका जीवन दिशाहीन, निरर्थक एवं अकेला होने लगता है। 'वे दिन' में भी 'मैं' (इंदी), टी. टी., फ्रान्ज, मारिया, रायना और मीता इसी प्रकार की जटिल मानसिकता में फँसे हुए पात्र हैं। फ्रान्ज और रायना के माध्यम से युद्ध के सांकेतिक तंतु स्पष्ट होते हैं। फ्रान्ज का बचपन लड़ाई में बीता है तो रायणा का यौवन युद्ध को सहता है। फ्रान्ज में

रीतापन, मानसिक तनाव, घुटन है, यही नहीं वह युद्ध के कारण अपने परिवेश से कट गया है। रायना का जीवन भी युद्ध की अभिशप्त छाया से जुड़ा हुआ है। उसका यौवन युद्ध ने छीन लिया था। उसके मन में युद्ध का भय इस तरह समाया हुआ था कि घर पर आने पर घर उसे एक कैम्प लगता है। युद्ध ने उसके जीवन को पूरा नष्ट कर दिया था, उसे किसी भी काबिल नहीं छोड़ा था। रायना कहती है- ''एक दिन मैं बाहर आ गई... यह जानते हुए भी कि मैं बाहर किसी काबिल नहीं रह गई हूँ... ''[67] युद्ध ने उसके जीवन की शांति और कोमल भावना छीन ली है। युद्ध के कारण भय, अविश्वास, अकेलापन, अजनबीपन की गहरी पीड़ा उसे दबोच लेती है और अंतः उसका जीवन एक भटकन बन जाता है। हर समय वह संवेदनाहीन जीवन, युद्ध के समय की बात कहती है- ''कोलन में हमने कभी नहीं सोचा था कि हम जीवित रहेंगे। मरना तो बहुत पास था और आसान भी। हम शायद इसीलिए साथ रहने लगे थे... लड़ाई में बहुत लोग मरते हैं- इसमें कुछ अजीब नहीं है... लेकिन कुछ चीजें लड़ाई के बाद मर जाती हैं- शांति के दिनों में भी... हम उनमें थे।''[68] युद्ध ने प्रेम और संवेदना को रायना से छीन लिया है। निर्मल वर्मा ने युद्ध की भीषणता को इस उपन्यास में स्पष्ट किया है। युद्ध में जितने व्यक्तियों की शारीरिक हत्या करता है इससे अधिक जीवित व्यक्तियों की। जीवित रहते हुए भी मृत बना देता है। वह मानवी संबंध अधिक जर्जर एवं खोखले बनाता है।

5.14 नशापान की समस्या -

आधुनिक जीवन में मानवीय मन अधिक भावनिक बन गया है। जीवन में असफलता तथा मानसिक अशांति के कारण वह नशा का सहारा ले रहा है। आज तो नशा एक फॅशन बन गया है। नशापान करना आज एक प्रतिष्ठा का प्रतीक बना है। आज उच्चवर्ग तथा मध्यवर्ग में कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य संपन्न होने पर तथा त्यौहारों में पार्टियाँ मनाने की पद्धति शुरू हो गई है। यह पाटियाँ शराब के बिना नहीं होती हैं। तो निम्नवर्ग निराश, दुःख, असफलता, संघर्षपूर्ण जीवन त्रासदी को भूलाने के लिए शराब का सहारा लेता है। इसका सामाजिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य पर बुरा असर हो रहा है। युवा पीढ़ी दिशाहीन हो रही है। आज युवा वर्ग चरस, अफीम, ब्राऊन शुगर, कोकेन, शराब की गहरी खाई में डूब गया है। फलस्वरूप समाज में अराजकता, अशांतता तथा अनैतिकता का बोलबाला है। डॉ. राम आहुजा इस समस्या के संदर्भ

में लिखते हैं- ''शराब पीने से घातक और अनर्थकारी परिणाम हो सकते हैं। यह उसे शारीरिक रूप से प्रभावित कर सकती है, उसकी काम करने और कमाने की क्षमता को नष्ट कर सकती है, उसके पारिवारिक जीवन को बर्बाद कर सकती है और मनोबल को पूर्ण रूप से गिरा सकती है।''[69] आज समाज में जो हत्याएँ हो रही हैं, बलात्कार हो रहे हैं, चोरियाँ हो रही हैं इसके पीछे शराब ही है।

'शह और मात' उपन्यास के उदय तथा मुलायम सिंह को सिगारेट पीने की आदत है, जो अपने मानसिक तनाव को कम करने के लिए पीते दिखाई देते हैं। मोहन राकेश ने 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में नशापान की समस्या को उठाया है। मध्यवर्गीय स्त्री-पुरुषों में बढ़ती नशापान की आदतों का चित्रण हरबंस और नीलिमा के माध्यम से किया है। हरबंस अपने अशांत दांपत्य जीवन की त्रासदी, घुटन, पीड़ा, अकेलेपन से छुटकारा पाने के लिए शराब का सहारा लेता है। नीलिमा के साथ झगड़ा होने पर वह रातभर शराब पीता है जिसका परिणाम उसका शारीरिक स्वास्थ्य गिरने लगता है। नीलिमा आधुनिक नारी है, वह अपने जन्मदिन के समय, सुरजीत के यहाँ पार्टियों में शराब पीती है। शराब तथा सीगार की आदत उसे हरबंस ही लगाता है और बाद में शराब को लेकर झगड़ा होता है। आज नारियाँ स्वतंत्रता और आधुनिकता के नाम पर बुरी आदतों का शिकार बन रही हैं।

'वे दिन' उपन्यास में प्रत्येक पात्र शराब की नशा में डूबा है। युद्‌ध की अभिशप्त छाया या पीड़ादायक अतीत को भूलने और अकेलेपन को दूर करने के लिए मात्र शराब का सहारा लेते हैं। उपन्यास में पात्रों का खाली समय बिताने का स्थान रेस्ताराँ, पब, होटल ही है जिसमें बैठकर वह घंटों शराब पीते हैं। उपन्यास, स्लिबोवित्से, चियान्ती, कोन्याक, वोदका, बियर, चेरी, तोकाई आदि से भरा हुआ है। सभी पात्र पानी की तरह शराब पीते हैं। शराब पीने के दो कारण हमें दिखाई देते हैं- एक तो वहाँ के ठंड़े वातावरण और दूसरा पात्र अपने अतीत को भूलने या अकेलापन, अलगावबोध को दूर करना। रायना तो बचपन से पीती है। कथानायक, टी. टी., फ्रान्ज, मारिया सभी शराब एवं सिगार का सहारा लेते दिखाई देते हैं। पूरे उपन्यास में पात्र शराब प्यास मिटाने के लिए, नींद आने के लिए, गम भुलाने के लिए पीते हैं। माँ के विवाह के गम में टी. टी शराब पीता है। वह कहता है- ''डरो नहीं... उसने हँसकर कहा, 'मैं अपनी माँ के विवाह की

खुशी में अकेला नहीं पीऊँगा।' "[70] वास्तव रूप से टी. टी. माँ के शादी से खुश नहीं दुःखी है। अतः पूरे उपन्यास में शराब तथा शराबघरों का वातावरण हावी दिखाई देता है।

'वे दिन' उपन्यास में नशापान की समस्या का चित्रण सबसे अधिक है और अन्य उपन्यासों में संकेत रूप में आया है। आज के युग में नशा के लिए स्त्री-पुरुष अपना सबकुछ दाँव पर लगा रहे हैं। महानगरों में यह एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर रही है।

5.15 उपेक्षित बालक की समस्या -

मानव विचारशील प्राणी है। वह सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ को जानता और समझना चाहता है, पर सबसे अधिक उसकी अभिरुचि का केंद्र है- मानव। डॉक्टर देवराज उपाध्याय इस संदर्भ में लिखते हैं- "मानव के प्रति मानव की चिंता को समझने, समझाने, देखने, बुझने के प्रयत्न को मनोवैज्ञानिक अध्ययन कहते हैं। इसमें मानव व्यापार, उसके क्रिया कलाप, उसके आचरण और प्रतिक्रियाओं का अध्ययन होता है।"[71] हिंदी उपन्यास साहित्य में मानवी मनोविज्ञान या चरित्र को खोलने का प्रयास अनेक रचनाकारों ने किया है। इसमें उन्होने मानवी मन की समस्याएँ, उसकी अकांक्षाएँ और स्थिति का चित्रण किया है। बाल मनोविज्ञान का भी चित्रण अनेक उपन्यासों में मिलता है। आज समाज में दांपत्य जीवन के विघटन के कारण उपेक्षित बालकों की समस्या गंभीर रूप ले रही है। अनाथालयों में बच्चों की संख्या बढ़ रही है। उपेक्षित बालकों का चित्रण करते समय उसकी मानसिक स्थिति, उसकी अवहेलना, समस्याएँ आदि का चित्रण किया गया है।

डॉ. मोहन राकेश ने उपन्यास 'अंधेरे बंद कमरे' में उपेक्षित बालक की समस्या का चित्रण किया है। हरबंस और नीलिमा के झगड़े का प्रभाव उनके बेटे अरुण पर पड़ता है। वह इनके अनबन से तंग आकर इनसे कटा-कटा एवं शांत रहता है। तनाव की वजह से वह क्रोधी बन जाता है। नीलिमा उसकी स्थिति के संदर्भ में कहती है- "कभी-कभी हम लोग लड़ते हैं, तो बैठा-बैठा रोने लगता है और घर की चीजें तोड़ने-फोड़ने लगता है।"[72] अरुण नीलिमा और हरबंस के अनबन का शिकार हो जाता है। हर समय वह खुद को असहाय, उपेक्षित समझता है। दोनों के संघर्ष में उसका बचपन नष्ट हो जाता है।

'वे दिन' उपन्यास में रायना और जाक का बेटा मीता उपेक्षित-सा दिखाई देता है। रायना और जाक अलग-अलग रहते हैं लेकिन मीता को बारी-बारी से बाँट लेते हैं। रायना का कथन मीता की स्थिति को स्पष्ट करता है- "हम उसे बाँट लेते हैं... पिछले साल छुट्टियों में वह जाक के संग था। अब कुछ महीनों से मेरे साथ रह रहा है... हम अभी तक कोई निश्चय नहीं कर पाए हैं।"[73] स्पष्ट है रायना और जाक के अलग रहने से मीता का जीवन अस्थिर बन गया है। उसमें भी हमें अकेलापन, अलगावबोध, घुटन की भावना भरी दिखाई देती है। मीता को रात-रात छोड़कर अपने प्रेमियों के साथ घूमती है। युरोप तथा अन्य पाश्चात्य देशों में मीता जैसे बच्चों की समस्या बढ़ गई है। इन देशों में विवाह संस्था के नष्ट हो जाने से स्त्री-पुरुष कुछ साल एक साथ रहते हैं और बाद में अलग हो जाते हैं। इन सालों में जो बच्चे पैदा हो जाते हैं उन्हें अनाथालयों में भर्ती कर दिया जाता है। उन्हें माँ-बाप होकर भी न उनका प्यार मिलता है न आसरा, परिणामस्वरूप उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ जाती है। इन बच्चों में संस्कर, मूल्य, नैतिकता, प्रेम, अपनेपन की भावना का अभाव दिखाई देता है। यह बच्चे युरोपीय देशों में एक समस्या के रूप में सामने आ रहे हैं।

मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में बाल मनोविज्ञान तथा उनसे जुड़ी समस्याओं का सही एवं वास्तविक चित्रण है। बंटी की समस्याएँ माता-पिता से न जुड़ पाने की विवशता से उभरी है। बंटी के जीवन में भा गई समस्याएँ आधुनिक जीवन के बदलाव का परिणाम है, जिसका कोई हल हमारे पास नहीं है। 'बंटी' आज हर घर में एक 'प्रॉब्लेम चाईल्ड' के रूप में दिखाई देता है। इसके संदर्भ में मन्नू भंडारी का कथन दृष्टव्य है- "मुझे लगा कि बंटी किन्हीं दो-एक घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में साँस ले रहा है- अलग-अलग संदर्भों में, अलग-अलग स्थितियों में। लेकिन इन बच्चों में एक बात मुझे समान लगी और वह यह कि यह सभी फालतू, गैर-जरूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं।"[74] बंटी के मन में जो अकेलापन, अहं, प्रतिशोध की भावना है वह अजय और शकुन के व्यवहार की देन है। उसका बाल मन हमेशा ममी-पापा की अनबन, तलाक, शादी आदि बातों को लेकर त्रस्त रहता है। यह प्रश्न उसे अस्थिर एवं असहज बना देते हैं। शकुन और अजय बंटी के मन को समझे बिना उसे एक हाथियार के रूप में इस्तमाल करते हैं, जो उसका जीवन नष्ट करता है। उसमें क्रोध, अहं एवं हीनता बोध बढ़ता है।

वह अपनी उपेक्षितता के कारण खुद को फालतू समझता है। बंटी सोचता है- ''डॉक्टर साहब, ममी आगे की खिडकीयों पर बैठे हैं और जोत और अमित पीछे की खिडकियों पर। बस वही फालतू-सा बीच में बैठा है।''[75] स्पष्ट है बंटी में जो उपेक्षा एवं अपमान की भावना है उसे क्रोधी एवं हठी बना देती है। बंटी न शकुन के साथ एडजेस्ट कर पाता है न जय के साथ। उसे होस्टल में भेज दिया जाता है।

उपन्यास में बंटी के प्रति शकुन और अजय का जो व्यवहार है वह उसे 'समस्या बालक' बनाने में अहम भूमिका निभाता है। बंटी न ममी से जुड़ पाता है न पापा से, क्योंकि दोनों भी बंटी के बाल सुलभ मन की, उसकी आशाएँ, आकांक्षाओं के संदर्भ में सोचा नहीं है, अपने-अपने घरौंदे बनाने में व्यस्त रहते हैं, जिससे बंटी का जीवन ढह जाता है। मन्नू ने बाल मनोविज्ञान तथा बाल समस्या का यथार्थ चित्रण किया है जो हमें सोचने पर मजबूर करता है।

अतः 'अंधेरे बंद कमरे' का अरुण, 'वे दिन' का मीता एवं 'आपका बंटी' का बंटी, सभी उपेक्षित एवं आधुनिक दांपत्य जीवन के विघटन की शाप से पीड़ित दिखाई देते हैं। आज महाहनगरों में इन बच्चों की समस्या बढ़ गई है। आधुनिक रचनाकारों ने बालमनोविज्ञान तथा बालक की समस्याओं को सूक्ष्मता से चित्रित किया है।

निष्कर्ष -

विवेच्य उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष तक पहुँचे हैं कि चारों उपन्यास अपने समकालीन परिवेश एवं समकालीन समस्याओं से यथार्थ रूप से जुड़े हैं। चारों उपन्यासों में मनवीय चेतना को आधुनिक समस्याओं के प्रति सजग करने का सफल प्रयास किया गया है। 'शह और मात', 'अंधेरे बंद कमरे', 'वे दिन', 'आपका बंटी' उपन्यासों के आधुनिक जीवन की बहुआयामी समस्याओं का चित्रण किया है। महानगरीय जीवन तथा महानगरीय टूटते दांपत्य जीवन, अकेलापन, अर्थाभाव, बेरोजगारी, नशापान, मकान की समस्या आदि समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

आलोच्य उपन्यासों में सबसे अधिक प्रभावी समस्या परिवार विघटन एवं टूटते दांपत्य जीवन की समस्या। इस परिवार विघटन एवं टूटते दांपत्य जीवन का प्रमुख कारण है- स्त्री-पुरुष का अहंभाव एवं सामंजस्य का अभाव है। महानगरों में जीवन-यापन करनेवाले मध्यवर्गीय

परिवारों में दांपत्य जीवन में असंतोष एवं दरार दिखाई देती है। चारों उपन्यासों में से मोहन राकेश के 'अंधेरे बंद कमरे' उपन्यास में टूटते दांपत्य जीवन का चित्रण अधिक सूक्ष्मता से किया गया है। उसके पीछे खुद मोहन राकेश जीवन की अस्थिरता एवं असफलता है। 'आपका बंटी' में भी टूटते दांपत्य जीवन के कारण, उसके परिणामों का विवेचन कर उपायों का भी संकेत किया है। आधुनिक युग की गतिमानता एवं अस्थिरता ने मानवी जीवन पर गहरा असर डाला है। अंतर्द्वंद्व के कारण आज मानव घुटन, संत्रास, अकेलापन, अलगावबोध की पीड़ा को लेकर जीने के लिए अभिशप्त है। चारों उपन्यासों के पात्र अंतर्द्वंद्व एवं अकेलेपन की पीड़ा सहते हैं।

विवेच्य उपन्यासों में प्रेम जीवन का चित्रण किया है। इन उपन्यासों में आधुनिक प्रेम पद्धति, उसका दिखावटीपन, असफलता आदि का वर्णन किया है। आज लोगों में प्रेम भाव का अभाव दिखाई देता है। प्रेम के अभाव के कारण परिवार, रिश्तें और दांपत्य टूट रहे हैं। प्रेम में व्यापारिकता एवं व्यवहारिकता बढ़ गई है। प्रेम के अभाव के कारण मानवता एवं सांस्कृतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। 'शह और मात' में प्रेम जीवन तथा आधुनिक युग में प्रेम पर विस्तार से विवेचन किया है। प्रेम समस्या के रूप में 'अंधेरे बंद कमरे' और 'आपका बंटी' में उभरा है। निर्मल वर्मा ने प्रेम को सिर्फ शारीरिक भोग के रूप में चित्रित किया है। सभी उपन्यासों में प्रेम समस्या का गहराई से चित्रण किया है।

नारी समाज में सदा प्रताड़ित एवं शोषित रही है। आज सभी क्षेत्रों में नारी ने विकास किया है। आधुनिक बनने की इच्छा ने नारियों के सामने अनेक समस्याएँ निर्माण हो गई हैं। आज नारी अपने व्यक्तिगत स्वातंत्र्य एवं 'स्व' या अस्तित्व के लिए कड़ा संघर्ष कर रही है। 'शह और मात' की सुजाता, अपर्णा, 'अंधेरे बंद कमरे' की नीलिमा, सुषमा, 'वे दिन' की रायना और 'आपका बंटी' की शकुन आधुनिक नारियाँ हैं, जो अपने शोषण का विरोध कर अपने स्वातंत्र्य के लिए लड़ती हैं। इस संघर्ष में वह कुछ हद तक सफल होती हैं लेकिन उनमें एक अस्थिरता, अकेलापन, घुटन, अलगाव-बोध अभिशाप की तरह छा जाता है। यह समस्या आज महानगरों में रहनेवाली सभी मध्यवर्गीय नारियों एवं युवतियों की बन गई है।

आधुनिक युग में भोगवादी संस्कृति के कारण समाज में नैतिकता, अनैतिकता को तिलांजलि दी गई है। समाज में आज अनैतिकता, अनाचार इतना बढ़ गया है कि उसके सामने

सच्चाई, रिश्ते और कर्म सब कुछ बेकार हो गए हैं। आधुनिक युग में स्त्री-पुरुष अपने यौन तृप्ति के लिए अन्य से संबंध रखते हैं। अपनी शारीरिक प्यास बुझाने के लिए वह न रिश्तों का खयाल करते हैं न आयु न ओहदे का। चारों उपन्यास में अनैतिक संबंध की समस्या एवं यौन लिप्सा की समस्या का विवेचन किया गया है तथा उसके परिणामों का भी चित्रण किया है। यौन भूख आदमी को दिशाहीन कर देती है।

आधुनिकीकरण, नागरीकरण, भूमंडलीकरण, औद्‌योगिकरण ने महानगरों का विकास किया, ग्रामीण जनता को आकर्षित किया लेकिन अकार्यक्षम, प्रशासन, अनियोजित उद्‌योगों का विकास तथा व्यवसायों की दिशाहीनता ने बेरोजगारी को बढ़ावा दिया है। विवेच्य उपन्यासों में महानगरों में रहनेवाले निम्नवर्ग एवं मध्यवर्ग को बेरोजगारी के कारण संघर्ष पूर्ण एवं आर्थिक दुरावस्था में जीवन यापन करना पड़ता है। बेरोजगारी के कारण युवक निराश होकर अनैतिक कार्यों के प्रति आकृष्ट होते जा रहे हैं। क्षमता और उच्च शिक्षा होकर भी छोटे तथा हीन कार्य करने के लिए मजबूर होते इसका भी विवेचन इन उपन्यासों में किया है।

समाज में आज विवाह संस्था को नकारा जा रहा है। फलस्वरूप समाज में मानवी मूल्यों की टूटन एवं अनैतिक कार्य बढ़ रहे हैं। आज दांपत्य जीवन में विवाह को पवित्र बंधन न मानकर एक निरर्थक बंधन मान रहे हैं। सामंजस्य, प्रेम, अपनापन, विश्वास के अभाव के कारण दांपत्य टूटकर तलाक ले रहे हैं। आलोच्य उपन्यासों में वैवाहिक जीवन की अशांतता एवं निरर्थकता को शब्दबद्‌ध किया है। 'आपका बंटी' उपन्यास में तलाक की समस्या का चित्रण यथार्थ रूप में एवं उसके घातक परिणामों को रूपायित किया है।

आण्विक अस्त्र एवं युद्‌ध का खतरा आज पूरे विश्व के सिर पर मंडरा रहा है। युद्‌ध की भीषणता को निर्मल वर्मा ने 'वे दिन' में चित्रित किया है। इसमें स्पष्ट किया है कि युद्‌ध केवल मानव, आर्थिक, सामाजिक हानि ही नहीं करता तो आनेवाली पीढ़ी के लिए अभिशाप बन जाता है।

नशा आज हमारे देश के सामने गंभीर समस्या के रूप में खड़ी है। आज नशापान बंदी के लिए विविध कानून तैयार हो रहे हैं। नशा का सहारा केवल पुरुष ही नहीं तो आज महानगरों में रहनेवाले उच्चवर्ग, मध्यवर्ग की नारियाँ भी ले रही हैं। चारों उपन्यासों में से 'अंधेरे

बंद कमरे' और 'वे दिन' में नशापान की समस्या को गहराई से उकेरा है। 'वे दिन' उपन्यास का वातावरण तो शराबघरों तथा नशा से भरा हुआ है।

आधुनिक जीवन में अनेक कारणों से दांपत्य जीवन खंडित हो रहा है। तलाक लेकर दांपत्य अलग हो जाते हैं। अपने अहं, सामंजस्य, प्रेम, विश्वास के कारण दांपत्य जीवन टूट जाता है। पति-पत्नी तलाक लेकर अलग तो हो जाते हैं लेकिन उनके बच्चे माँ-बाप होकर भी उपेक्षित जीवन जीते हैं। उन बालकों की मानसिकता को न कोई समझता है न उनकी समस्याओं को। माँ-बाप के इस उपेक्षित व्यवहार से इन बालकों में क्रोध, हट, अपमान, हीनता की भावना बढ़ जाती है। विक्षिप्त मानसिकता में वे अपना जीवन जीते हैं। इस समस्या का 'अंधेरे बंद कमरे' में अरुण द्वारा, 'वे दिन' में मीता द्वारा, 'आपका बंटी' में बंटी के द्वारा यथार्थ रूप में एवं मार्मिकता से चित्रण किया है। उपेक्षित बालकों की समस्या का तथा बाल मनोविज्ञान का सटीक चित्रण मन्नू भंडारी के 'आपका बंटी' उपन्यास में मिलता है।

निष्कर्षतः आलोच्य उपन्यासों में आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को यथार्थ रूप में तथा मार्मिकता से रूपायित किया है। सभी समस्याएँ वर्तमान युग में भी प्रासंगिक हैं। सभी समस्याएँ अपने युग और परिवेश से जुड़ी हैं क्योंकि विवेच्य चारों रचनाकारों का जीवन संघर्षपूर्ण रहा है। अनुभूति, समाज का ज्ञान, युगबोध का भाव आदि के कारण से रचनाएँ प्रासंगिक, वास्तविक, चिंतनशील हैं। मध्यवर्ग के जीवन का प्रतीक लगती है।

संदर्भ सूची

1. डॉ. उषा मंत्री - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक संदर्भ, पृ. 6
2. डॉ. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 158
3. वही, पृ. 159
4. डॉ. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 172
5. वही, पृ. 102
6. वही, पृ. 311
7. निर्मल वर्म - वे दिन, पृ. 140
8. प्रा .किशोर गिरडकर - मन्नू भंडारी का कथा-साहित्य, पृ. 19
9. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 31
10. डॉ. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 19
11. डॉ. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 92
12. वही, पृ. 9
13. डॉ. रघुनाथ शिरगावकर - निर्मल वर्मा का कथा-साहित्य, पृ. 173
14. डॉ. बाबू जोसेफ - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अलगाव-बोध, पृ. 81
15. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 243
16. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 30
17. वही, पृ. 144
18. डॉ. मंजूला गुप्ता - हिंदी उपन्यास : समाज ौर व्यक्ति का द्ववंद्व, पृ. 58
19. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 45
20. राजेंद्र यादव - अठारह उपन्यास, पृ. 197
21. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 189
22. डॉ. बाबू जोसेफ - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अलगाव-बोध, पृ. 59
23. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 55
24. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 154

25. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 102
26. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 27
27. वही, पृ. 151
28. मोहनराकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 154
29. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 33
30. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 26
31. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 256
32. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 131
33. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 109
34. वही, पृ. 65
35. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 102
36. वही, पृ. 310
37. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 79
38. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 32
39. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 126
40. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 170
41. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 117
42. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 37
43. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 155
44. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 310
45. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 99
46. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 32
47. वही, पृ. 5
48. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 31
49. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 189
50. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 42

51. मन्नू भंडारी - भूमिका, बंटी की जन्म पत्री, पृ. 5
52. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 163
53. डॉ. महेंद्र भटनागर - समस्यामूलक उपन्यासकार प्रेमचंद, पृ. 175
54. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 72
55. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे,पृ. 124
56. डॉ. शैल रस्तोगी - हिंदी उपन्यासों में नारी, पृ. 311
57. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 286
58. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 240
59. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 103
60. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 142
61. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 94
62. निमल वर्मा - वे दिन, पृ. 21
63. डॉ. पद्मा चामले - आधुनिक कहानियों में युवा मानसिकता, पृ. 132
64. राजेंद्र यादव - शह और मात, पृ. 36
65. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 15
66. डॉ. बाबू जोसेफ - स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में अलगाव-बोध, पृ. 73
67. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 243
68. वही, पृ. 243
69. डॉ. राम आहुजा - सामाजिक समस्याएँ, पृ. 350
70. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 129
71. डॉ. देवराज उपाध्याय - आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य और मनोविज्ञान, पृ. 40
72. मोहन राकेश - अंधेरे बंद कमरे, पृ. 189
73. निर्मल वर्मा - वे दिन, पृ. 99
74. मन्नू भंडारी - आपका बंटी (भूमिका), पृ. 4
75. मन्नू भंडारी - आपका बंटी, पृ. 89